अद्भुत आडियो कैसेट

1. स्वामी सच्चिदानंद
2. पूज्य सच्चिदानन्द स्तवन
3. सिद्धाश्रम
4. सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
5. मैं सिद्धाश्रम में सशरीर विचरण कर सकता हूं।
6. गुरू गति
7. गुरू हमारो गोत्र है
8. गुरू गति पार लगावे
9. गुरू मोरो जीवन प्रेम अधार
10. गुरू पादुका पूजन
11. दुर्लभोपनिषद
12. शिष्योपनिषद
13. प्रेम धार तलवार की
14. प्रेम न हाट बिकाय
15. प्रेम पंथ अति कठिन है
16. अकथ कहानी प्रीत की
17. पिव बिन बुझे न प्यास
18. सूली ऊपर सेज पिया की
19. घूंघट के पट खोल री
20. बिरहिन दियरा जोवे बाट
21. काहि विधि करूं उपासना
22. मैं खो गया तुम भी खो जाओ
23. मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं
24. मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
25. हिप्नोटिज्म रहस्य
26. परा विज्ञान
27. पारद विज्ञान
28. पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
29. पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
30. लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (तीन भाग)
31. लक्ष्मी मेरी चेरी
32. शिव सूत्र
33. शिव सूत्र
34. पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (3 भाग)
35. कुण्डलिनी योग
36. कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
37. ध्यान योग
38. क्रियायोग शिविर (6 भाग)
39. साधना सूत्र
40. साधना, सिद्धि एवं सफलता
41. ध्यान, धारणा और समाधि
42. समाधि के सात द्वार
43. मृत्योर्मा अमृतं गमय
44. समाधि रहस्य
45. अणिमा सिद्धि
46. लघिमा सिद्धि
47. विशेष लामा मंत्र
48. ॐ मणि पद्मे हुं
49. चामुण्डा दीक्षा
50. सतोपंथी दीक्षा
51. तंत्र रहस्य
52. मां भगवती जगदम्बे शत्-शत् वन्दन
53. महासरस्वती स्वरूप साधना
54. महालक्ष्मी स्वरूप साधना
55. महाकाली स्वरूप साधना
56. महालक्ष्मी साधना
57. विशेष दीपावली साधना
58. कुबेरपति शिवशक्ति साधना
59. अक्षय पात्र साधना
60. कायाकल्प साधना
61. षोडश अप्सरा साधना
62. स्वर्ण देहा अप्सरा साधना (2 भाग)

सिद्धाश्रम के प्रणेता

❋

परमहंस सिद्ध योगी

❋

निखिलेश्वरानन्द जी

जिनका सांसारिक नाम है

❋

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

❋

जीवन चरित

❋

संकलन
योगेन्द्र निर्मोही

प्रकाशक

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी
जोधपुर-342001 (राजस्थान)
टेलीफोन-0291-32209

मुद्रक – शाकल्य प्रिंटर्स नई दिल्ली

संकलन - योगेन्द्र निर्मोही

मूल्य - दस रुपये

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग: हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर-342001 (राजस्थान)

कथ्य

योगियों की गति अपरम्पार होती है, जिसे सामान्य और सहज बुद्धि वाले नहीं पहिचान पाते। प्रत्येक योगी की दो अवस्थाएं होती है, एक अवस्था देहगत होती है जो कि उसके जन्म से मृत्यु तक देखी जाती है, इस देहगत अवस्था में उसकी आयु और उसके क्रिया कलाप स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते है।

पर उसकी दूसरी अवस्था साधनात्मक होती है जो कि सामान्यतः दिखाई नहीं देती, परन्तु उसका विस्तार कई-कई जन्मों से जुड़ा होता है इसलिये इस प्रकार की अवस्था में उसकी आयु भी सैकड़ों या हजारों वर्षों की होती है। इस साधनात्मक अवस्था में उसकी साधना, उसके क्रियाकलाप उसके जीवन के रहस्य और उसका आन्तरिक ज्ञान चिन्तन, साधना, वैराग्य आदि सहज रूप से किसी को भी दिखाई नहीं पड़ते।

फलस्वरूप एक योगी की देहगत आयु पचास या साठ वर्ष हो सकती है, परन्तु साथ ही साथ उसकी साधनागत आयु उस समय पांच सौ, छः सौ या आठ सौ वर्षों की भी हो सकती है। देहगत अवस्था में उसके क्रियाकलाप और उसका जीवन सामान्य सा दिखाई पड़ सकता है, परन्तु वही व्यक्ति साधनागत अवस्था में पहुंचा हुआ हो सकता है, उसका सहस्रार जाग्रत हो सकता है उसे सैकड़ों सिद्धियां प्राप्त होती हैं, भले ही वे प्रत्यक्ष जगत में दिखाई दें या न दें।

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी भी ऐसे ही उच्च एवं महान् योगी है, जिनकी देहगत आयु भले ही कम हो परन्तु साधनागत आयु हजारों वर्षों की है। देहगत आयु में वे एक अच्छे ज्योतिषी कर्मकाण्डी, अध्यापक आदि दिखाई दे सकते है, परन्तु साधनागत अवस्था में वे सिद्धाश्रम के अद्वितीय योगी और हजारों-हजारों सिद्धियों के स्वामी है, जिनकी किंचित झलक इस पुस्तक में आपको दिखाई देगी।

बुद्धि के माध्यम से किसी की साधनागत अवस्था को नहीं जाना जा सकता, तर्क के माध्यम से उनकी साधनाओं और उनकी उपलब्धियों को नहीं पहिचाना जा सकता, और विज्ञान के सहारे किसी ज्ञान को चीन्हा भी नहीं जा सकता, यह तो एक अलग ही विषय है अलग ही संसार है और इसको जानने की पद्धति भी अलग ही है। संसार के कोई भी नियम भौतिक जगत की कोई भी व्यवस्था इस प्रकार के सिद्धान्त पर लागू नहीं होती, और न इस प्रकार की किसी साधनागत उपलब्धियों, आयु या जीवन को चैलेन्ज किया जा सकता है, न उसकी आलोचना की जा सकती है, और न उसके बारे में वाद-विवाद या तर्क की कोई गुंजाइस है।

स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का व्यावहारिक या सांसारिक नाम डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली है, जो अत्यन्त सरल, सहज और सामान्य प्रतीत होते है। उनसे बात-चीत

करने पर किसी दूरी का एहसास नहीं होता अपितु ऐसा लगता है कि जैसे बिलकुल पास में ही पवित्र गंगा नदी बह रही हो और हम उसमें अवगाहन कर शरीर को, मन को और प्राणों को पूर्णत: शीतल एवं पवित्र कर रहे हों। उनके पास बैठने से ऐसा लगता है कि जैसे सांसारिक दु:खों और विपत्तियों की ऊष्मा से झुलसे हुए शरीर को शीतल छाया का अनुभव हुआ हो, ऐसा लगता है कि जैसे जीवन का जो लक्ष्य है जीवन की जो उपलब्धि है वह यही व्यक्तित्व है और जिसके पास क्षण भर बैठना भी जीवन का सौभाग्य कहा जा सकता है।

वास्तव में ही श्रीमाली जी के अन्दर एक ऐसा अलौकिक व्यक्तित्व विद्यमान है, जिसे हिमालय तो क्या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निखिलेश्वरानंद ही के नाम से जानता है। जिसके दर्शन करने से ही उच्चकोटि के योगी धन्य हो उठते है, तपस्वी जिसके चरणों की धूलि को अपने ललाट पर चंदन की तरह लगाकर अपने जीवन की सार्थकता अनुभव करते है। जो सिद्धाश्रम के प्राण है, हजारों-हजारों योगियों के मार्ग दर्शक है और विश्व की अन्यतम विभूति परमहंस स्वामी सच्चिदानंद जी के प्रिय शिष्य है।

जो असीम और दुर्लभ सिद्धियों के स्वामी हैं जिनके लिये कोई भी कार्य कठिन या असंभव नहीं, किसी भी प्राणी या मनुष्य के दु:खों को दूर कर देना, रोग मुक्ति या साधना में पूर्ण सिद्धि दिला देना उनके लिये सहज और सरल है, इतना होने पर भी वे देहगत अवस्था में अत्यन्त सरल और सामान्य है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि इस शरीर के भीतर एक प्रचण्ड ज्वालामुखी विद्यमान है, उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत ही नहीं होता कि इस कोमल काया के भीतर दुर्जय हिमालय विद्यमान है। वे एक साथ सांसारिक और यौगिक दोनों ही अवस्थाओं को संचालित करते रहते है। जाग्रत अवस्था में वे हम लोगों के बीच है तो साधना के समय या रात्रि के समय वे हजारों सन्यासी शिष्यों को साधनात्मक चिन्तन देते हुए व्यस्त रहते है। सिद्धाश्रम में सिद्ध योगियों का मार्ग दर्शन करते है। पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों का भ्रमण कर जहां-जहां भी भौतिक और आध्यात्मिकता का समन्वय करना होता है, करते है।

वास्तव में ही हमारी पीढ़ी और हम लोगों का सौभाग्य है कि ऐसी अद्वितीय विभूति हमारे बीच विद्यमान हैं, और उनके दर्शन कर, उनकी सेवा कर उनकी सामीप्यता साहचर्य पाकर अपने जीवन को पूर्णता प्रदान कर पाने में समर्थ हैं।

मैं ऐसे ही योगीराज परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी और देहगत श्री डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी का हृदय से वंदन करता हूँ।

योगेन्द्र निर्मोही

संक्षिप्त परिचय पत्र डा0 नारायण दत्त श्रीमाली

नाम	:	डा0 नारायण दत्त श्रीमाली
पता	:	1. 306 कोहाट एन्क्लेव प्रीतमपुरा नई दिल्ली फोन न: 7182248 2. हाई कोर्ट कालोनी डा0 श्रीमाली मार्ग, जोधपुर (राज0) फोन 32209
पिता का नाम	:	पं0 मुलतान चन्द श्रीमाली
शिक्षा	:	एम0 ए0 (हिन्दी) राजस्थान विश्व विद्यालय-1963 पी0 एच0 डी0 (हिन्दी) जोधपुर विश्वविद्यालय-1965
योग्यता क्षेत्र	:	(क) आपने भारतीय प्राच्य विद्याओं, दर्शन, मनोविज्ञान, परा-मनोविज्ञान, आयुर्वेद, योग, ध्यान, सम्मोहन विज्ञान एवं अन्य रहस्यमयी गुप्त विद्याओं के क्षेत्र में विशेष रुचि रखते हुये उनके पुनर्स्थापन में विशेष कार्य सम्पन्न किया है। (ख) आपने लगभग 156, ग्रन्थ, मंत्र, तंत्र, यंत्र सम्मोहन विज्ञान, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं अन्य गुप्त विद्याओं पर लिखे हैं जिसमें अधिकांश का अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित हुआ है। गुजराती, मराठी, तेलगू, रूसी भाषा में प्रकाशित अनेक ग्रन्थ बहुचर्चित रहे हैं, और विश्व के विद्वानों ने उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुये समय समय पर उन्हें उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है। इस क्षेत्र के सभी जिज्ञासुओं ने, चाहे वो प्रारम्भिक व उच्च स्तर के रहे हों इनसे लाभ उठाया है। विदेशों में आपके ग्रन्थों को बहुत अधिक पसन्द किया गया है। (ग) सभी 108 उपनिषदों पर आपने कार्य किया है। उनके गहन दर्शन एवं ज्ञान को सरल भाषा में प्रस्तुत कर जन कल्याण के लिये विशेष योगदान दिया है। इनमें

23 का प्रकाशन अब तक हो चुका है। वेद, योग और आयुर्वेद के क्षेत्र में आपके इसी प्रकार के योगदान को सभी विद्वानों ने सराहा है।

विशेष योगदान

(1) : (अ) मंत्र के क्षेत्र में आप एक स्तम्भ के रूप में जाने जाते हैं। आपने मंत्रों को एक विशेष विज्ञान का स्वरूप प्रदान किया है। मंत्रों की प्रामाणिकता, पुनर्स्थापित की है। आपने इस विषय पर अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं जिसमें **मंत्र - रहस्य, मंत्रों का प्रभाव, मंत्र और विज्ञान, मंत्रों का मूल - स्वरूप** आदि प्रमुख हैं मंत्ररहस्य ग्रन्थ तो एक शोध ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है।

(ब) आप इस क्षेत्र में अनेक सम्मेलनों की अध्यक्षता कर चुके हैं सन् 1973 में अखिल भारतीय मंत्र विज्ञान परिषद बनारस के अध्यक्ष रहे हैं। भारत के विभिन्न प्रान्तों में समय समय पर सम्पन्न होने वाले अनेक सेमीनारों के आप अध्यक्ष रहे हैं।

(2) तंत्र : (अ) तंत्र के क्षेत्र में डा० श्रीमाली का नाम पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ लिया जाता है। इन्होंने तंत्र को सर्वग्राह्य बनाकर अद्वितीय कार्य सम्पन्न किया है। तंत्र को सही रूप में परिभाषित कर सही मूल्यांकन के साथ समाज में पुनर्स्थापित किया है। इनके द्वारा रचित तंत्र ग्रन्थों **तांत्रिक-सिद्धियां, त्राटक, सूर्य सिद्धान्त, परा-विज्ञान अष्टादश सिद्धियां**, के माध्यम से आज तंत्र हमारे समाज में सही मान्यता प्राप्त कर सका है।

(ब) पूरे विश्व में तंत्र को सही परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट चिन्तन के साथ प्रचलित करने में विशेष योगदान रहा है।

(स) 57 तांत्रिक सम्मेलनों से अधिक की अब तक आप अध्यक्षता कर चुके हैं।

(3) यंत्र : भारत की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में 40 से भी अधिक शोध लेख-मंत्रों के प्रभाव एवं प्रामाणिकता पर प्रकाशित कर चुके हैं जिसमें श्री यंत्र का महत्वपूर्ण उल्लेख रहा हैं।
आपने मंत्रों से सम्बन्धित ग्रन्थ **मंत्रों का प्रकार, मंत्र-सिद्धि, मंत्र और आधुनिक मानव, विश्व में मंत्रों से सम्बन्धित कार्य**, आदि लिखकर इस क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया है।

(4) **कर्म-कांड** : (अ) आपने चारों वेदों को कंठस्थ कर उनका गूढ़ अध्ययन एवं मनन किया है। मूल मंत्रों (वेद) पर शोध कार्य सम्पन्न किया है। वेद मंत्रों की मूल ध्वनि एवं सही उच्चारण को आडियो एवं वीडियो कैसेट के माध्यम से जन कल्याण के लिये प्रस्तुत किया है।

(ब) भारत एवं विश्व के अनेक देशों में अब तक तीन हजार से भी अधिक यज्ञ सम्पन्न कर विश्व बन्धुत्व एवं विश्व शांति की दिशा में अद्वितीय कार्य किया है। फरवरी 91 में शिव रात्रि के अवसर पर नेपाल में एक विराट विश्व शांति यज्ञ का आयोजन कर डा० श्रीमाली ने नेपाल के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री भट्टराई की उपस्थिति एक दिव्य वातावरण का सृजन कर दोनों देशों की पारस्परिक कड़ी को और दृढ़ करने में अद्भुत कार्य किया है। श्री भट्टराई ने गद्गद् हृदय से उन्हें सम्मान-पत्र प्रदान किया।

(स) योग, मंत्र, तंत्र आयुर्वेद आदि विद्याओं से सम्बन्धित हजारों साधना शिविर आपके दिशा निर्देश में अब तक सम्पन्न हो चुके हैं। जिनमें देश विदेश के लाखों साधकों ने भाग लेकर विशेष चेतना एवं ज्ञान प्राप्त किया है। भारतीय संस्कृति एवं भारतीय प्राच्य विद्याओं के आधार एवं ज्ञान से मानव जीवन अधिक सुखी और सम्पन्न हो सकता है, इस मान्यता को उन्होंने चरितार्थ कर दिखाया है।

(5) योग : (अ) योग के विभिन्न स्वरूपों हठयोग, सहजयोग, आद्ययोग आदि का आपने जीवन में अभ्यास कर उनके मूल स्वरूप एवं प्रभाव को जन साधारण के सामने साधिकार प्रस्तुत किया है।

(ब) पाश्चात्य देशों में योग से सम्बन्धित अनेक उच्च स्तरीय प्रदर्शन जनहित के लिये किये हैं, अनेक योग सम्मेलनों की अध्यक्षता की है।

(6) आयुर्वेद : (अ) आयुर्वेद के क्षेत्र में जड़ी बूटियों से सम्बन्धित आपका शोध कार्य विशेष योगदान रखता है। 64 महत्वपूर्ण जड़ी बूटियां जिनका नागार्जुन ने अनेक ग्रन्थों में उल्लेख किया है। डॉ० श्रीमाली जी ने इनकी उपयोगिता स्थापित की है; ये सभी जड़ी बूटियां ला-इलाज बीमारियों को ठीक करने में ईश्वरीय वरदान के रूप में सिद्ध हुई है; जिनको आज के एलोपैथिक पद्धति से उपचार नही किया जा सकता।

(ब) सूर्य विज्ञान से पदार्थ परिवर्तन विषय पर आपने शोध कार्य कर जो ग्रन्थ लिखा है वह पूर्ण रूप से भारतीय प्राच्य विद्याओं पर आधारित है जिसकी प्रामाणिकता आज के युग में पूर्ण रूप से स्थापित हो चुकी है। आपके इस शोध कार्य ने विश्व के वैज्ञानिकों में भी एक विशेष हल चल पैदा की है।

(7) सम्मोहन विज्ञान : (अ) दक्ष सम्मोहन कर्ता के रूप में डा0 श्रीमाली जी का विश्व में अपना एक विशेष स्थान है इस क्षेत्र में आपका कार्य प्रामाणिक एवं सराहनीय रहा है।

(ब) इस विद्या से सम्बन्धित आपने प्रैक्टीकल हिप्नोटिज्म नाम का एक अद्वितीय ग्रन्थ लिखकर इसके महत्व को मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध कर दिया है। इस ग्रन्थ का अंग्रेजी में भी अनुवाद हो चुका है।

(स) सम्मोहन के माध्यम से आप अब तक हजारों लोगों का मानसिक एवं शारीरिक उपचार कर चुके हैं।

(द) मन की पूर्ण ग्रन्थियों एवं भावनात्मक तथा मानसिक तनाव से सम्बन्धित समस्याओं का निदान भी सम्मोहन के माध्यम से किया है।

(8) प्रकाशन : एक अद्वितीय हिन्दी मासिक पत्रिका मंत्र, तंत्र, यंत्र विज्ञान सन् 1981 से प्रकाशित कर रहे हैं। जिसके माध्यम से लुप्त होती हुई भारतीय गूढ़ विद्याओं का सही मूल्यांकन एवं पुनर्स्थापन किया है। इनके रहस्य का प्रामाणिक प्रस्तुतिकरण किया है।

सम्मान एवं पारितोषिक : (अ) भारतीय प्राच्य विद्याओं मंत्र, तंत्र, यंत्र, योग और आयुर्वेद के क्षेत्र में अनेक उपाधि एवं अलंकारों से आपका सम्मान हुआ है।

(ब) परा-विज्ञान-परिषद बनारस में सन् 1987 में आपको तंत्र शिरोमणी उपाधि से विभूषित किया है।

(स) मंत्र संस्थान उज्जैन ने 1988 में आपको मंत्र शिरोमणी उपाधि से अलंकृत किया है।

(द) भूतपूर्व उपराष्ट्रपति डा0 बी0 डी0 जत्ती ने सन् 1982 में आपको महा महोपाध्याय की उपाधि से सम्मानित किया है।

(क) उप राष्ट्रपति डा0 शंकरदयाल शर्मा ने 1989 के लिए समाज शिरोमणी उपाधि प्रदान कर राष्ट्रपति भवन में डा0 श्रीमाली का सम्मान कर गौरवन्वित किया है।

(ख) नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री भट्टराई ने 1991 में उनके विशेष योगदान एवं कार्यों के लिये नेपाल में आपको सम्मानित किया है।

अध्यक्षता : (अ) भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित होने वाली विश्व ज्योतिष कान्फरेंन्स 1979 में आपने 64 देशों के प्रतिनिधियों बीच अध्यक्ष पद सुशोभित किया

(ब) सन् 1979 से अब तक अधिकांश अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलनों के अध्यक्ष रहे ।

(स) संस्थापक एवं संरक्षक - अखिल भारतीय सिद्धाश्रम साधक परिवार

(द) संस्थापक एवं संरक्षक - डा0 नारायण दत्त श्रीमाली अन्तर्राष्ट्रीय फाउन्डेसन

विशेष : (अ) सम्मेलन, सेमीनार, एवं अभिभाषणों के सन्दर्भ में आप विश्व के लगभग सभी देशों की यात्रा कर चुके हैं। आपने तीर्थ स्थानों एवं भारत के विशिष्ट पूजा स्थलों पर आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से विशेष कार्य सम्पन्न किया है। उनके ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्वपूर्ण प्रामाणिकता के साथ पुनर्स्थापित किया है।

(ब) सामाजिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक अनेक संस्थाओं में आपका विशेष योगदान रहा है। जिनके द्वारा मानवीय दृष्टि से जन कल्याण का कार्य तेजी से चल रहा है।

सम्पर्क कार्यालय : (1) 306 कोहाट एनक्लेव
प्रीतमपुरा, नई दिल्ली
फोन: नं. 7182248

प्रमुख कार्यालय : (2) हाई कोर्ट कालोनी
डा0 श्रीमाली मार्ग
जोधपुर (राज.)
फोन: 32209

पूज्य गुरुदेव कहते है

''जब जब धरती प्यासी होती है, उसमें दरारें पड़ने लगती है, मेघ को बरसना ही पड़ता है, जब जब वातावरण गर्मी, तपन, और अन्तरदाह्य जरूरत से ज्यादा बढ़ जाता है, तब तब वासंती हवा को बहना पड़ता है और इसी प्रकार जब ऋषियों की वाणी दब जाती है, वेदों की ऋचाएं भौतिकता के नीचे कराहने लगती है, जब समाज अपना आधार ही खोने लगता है, जिस वृक्ष पर वह बैठा है, उसकी जड़ों को ही खोखला करने लगता है, तब मुझे बोलना ही पड़ता है और मेरे बोलने के पीछे केवल इतना ही भाव है।

मैं कहता हूं कि अभी तुम ईश्वर, ब्रह्म, साक्षात्कार इत्यादि बड़ी बड़ी बातों में मत उलझो, तुम्हें जादू देखने की जो आदत पड़ गई है, यह ब्रह्म, ईश्वर, परमात्मा, सिद्धियां कुण्डलिनी-जागरण जादू का विषय नहीं है और दूर खड़े रह कर यह सब कुछ कैसे प्राप्त कर सकते हो, केवल समुद्र के किनारे खड़ा रहने वाला समुद्र को पार नहीं कर सकता, किनारे पड़ा व्यक्ति समुद्र की गहराई का आनन्द भी नही ले सकता, जो समुद्र में कूदने से घबराता है, उसे कुछ कंकर, कुछ सीपियां और कुछ बालू के कण ही हाथ लगते है, पर जो समुद्र के बीच में कूदने की हिम्मत रखते है, जो चुनौतियों को झेल कर समुद्र मे कूदने की सामर्थ्य रखते है, उनके हाथ ही मोतियों से भरे होते है।

इसके लिए एक चुनौती का भाव होना चाहिए इसके लिए मन में एक चैलेन्ज की क्षमता होनी चाहिए, इसके लिए आंखो में तेज और आगे बढ़ने का हौसला होना चाहिए और मैं तुम्हें वह हौसला, वह हिम्मत, वह साहस देने के लिए ही आवाज दे रहा हूं, मैं तुम्हें बार बार यही कर रहा हूं कि किनारे खड़े रहने से समाप्त हो जाओगे, तुम ही नहीं तुम्हारी कई पीढ़ियां किनारे पर खड़े खड़े ही समाप्त हो गई और उनके हाथ कुछ नहीं लगा, थोड़े से रुपये पैसे, थोड़े से कपड़े-लत्ते, दो चार संतान, बेटे-बेटियां, दुःख और चिन्ता, परेशानियां और बाधाओं के अलावा उनके हाथ कुछ नहीं लगा और वे अपने साथ कफन का टुकड़ा तक नहीं ले जा सके, और यदि तुम भी इसी प्रकार किनारे पर खड़े ही रहे, तो तुम भी अपने साथ कुछ भी ले जा नहीं सकोगे।

यही समय है, चैलेन्ज लेने का, यही समय है आगे बढ़ने का, क्योंकि इतिहास इस बात का साक्षी है, कि जिन्होंने चैलेन्ज लिया, उन्होंने ब्रह्म को प्राप्त किया,

वशिष्ठ ने चुनौती का सामना किया, और 'ब्रह्मर्षि' कहलाये, मीरा ने लोक लाज छोड़ कर पैरों में घुंघरू बांधकर सड़कों पर साधुओं के बीच मगन हो गयी, तो वह ब्रह्म में पूर्ण रूप से समाने में समर्थ हो सकी, कबीर, फकीर की तरह घर से बाहर निकल पड़ा, तभी उसे चारों तरफ ब्रह्म की लाली दिखाई दी, सूर, तुलसी, रैदास, नानक, ने भी अपने जीवन मे इसी चैलेन्ज को उठाया, और जीवन का उद्देश्य पूरा किया, जीवन में वह सब कुछ पाया जो जीवन का लक्ष्य होता है, जो जीवन का उद्देश्य होता है, जो जीवन का धर्म होता है।

पर इसके लिए मिटना जरूरी है, यदि बीज जमीन मे मिलकर मिटे ही नहीं तो छायादार वृक्ष नहीं बन सकता, यदि वह किनारे खड़ा-खड़ा सोचे कि जमीन में मिल जाने के बाद पेड़ बनूंगा भी या नहीं, तो वह बीज कभी फलदार वृक्ष नहीं बन सकता, क्योंकि कुछ बनने के लिए मिटना जरूरी है, मैं भी जीवन में मिटा, और छायादार वृक्ष बन सका, जिसकी छाया तले ब्रह्म से साक्षात्कार करने के लिए अग्रसर हो, आतुर हो, आगे बढ़ने की क्षमता लिये हुए हो।

इसीलिए मैं कहता हूं, कि तुम्हारी मंजिल दूर नहीं है, यह मंजिल साधना की पगडंडियों पर से होकर ही आगे बढ़ती है, इस रास्ते के मार्ग में कई छायादार पेड़ मिलेंगे, ध्यान के, धारणा के, योग के, समाधि के, प्रेम के और मस्ती के, इन सभी छायादार पेड़ों के नीचे से होते हुए, तुम्हें आगे बढ़ना है, परन्तु रास्ता नहीं छोड़ना है, साधना का जो रास्ता मैंने तुम्हें दिया है, उस रास्ते से एक इंच भी इधर-उधर नहीं सरकना है, क्योंकि यह रास्ता निश्चित रूप से ब्रह्म से साक्षात्कार कराता है, निश्चय ही यह रास्ता ईश्वर में विलीन होता है, निश्चय ही यह रास्ता बूंद को समुद्र में विसर्जित करने की क्षमता रखता है।

और फिर तुम्हें, चिन्ता और भय, परेशानी और बाधा रहे ही क्यों? मैं हर क्षण प्रति पल इस रास्ते पर तुम्हारे साथ हूं, तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में होना चाहिए, तुम्हें मुझ पर विश्वास होना चाहिए, तुम्हारे पांव मेरे अनुसरण करते रहे, जल्दी ही तुम उस ईश्वरीय सत्ता में विलीन हो सकोगे, जिन्हें वेदों में पूर्णत्व कहा है, जरूर तुम उन देवताओं के, ब्रह्म के, पूर्ण रूप से दर्शन कर सकोगे, जिन्हें शास्त्रों में नेति-नेति कहा है।

बढ़ो, और आगे बढ़ो, प्रतिफल अग्रसर बनों, मैं प्रतिक्षण तुम्हारे साथ हूं, क्योंकि मैं तुम्हारा मार्ग दर्शक, पथ प्रदर्शक और गुरू हूं।''

आज से 21 वर्ष पहले जब पूज्य गुरूदेव ने यह संदेश दिया तो सुनने वा और इन शब्दों को ग्रहण करने वाले कुछ व्यक्तियों में, जो कि दिशाहीन भ्रमित अपने घमंड मे डूबे व्यक्ति थे, उनमें से मैं भी एक था, अपने जीवन में कुछ करना अवश्य चाहता था लेकिन यह कुछ क्या है, पकड़ मे नही आ रहा था, कहां कहां नहीं भटका, जगह जगह तीर्थ स्थानों पर गया, तरह तरह के मठ, आश्रमों मे रहा, और वहां जो कुछ धर्म, ध्यान और ज्ञान के नाम पर देखा, उससे मन और भी अधिक उदास हो गया।

तब यह संदेश पढ़ कर एक आवाज मेरे भीतर आई थी, यही तुम्हारी मंजिल है, यहीं तुम्हें अपना मार्ग मिल जायेगा, और जब उनके जोधपुर निवास पर जहां उनका आश्रम है, भेंट करने गया तो उन्होंने मुझे अपने पास बुला कर बैठने को कहा और उस समय उनके प्रथम शब्द यही थे।

''प्रिय ! तुम्हें भटकने की जरूरत नहीं है, तुम्हें परेशान होने की भी जरूरत नहीं है, तुम्हें और कुछ नहीं करना है, तुम्हें तो प्रसन्न रहना है, मुस्कराते हुए खिलखिलाते रहना है, इस घोर अंधेरे में तुम केवल इतना ही काम करो कि मेरा हाथ पकड़ लो, तुम केवल इतना ही करो कि पांव से पांव बढ़ा कर मेरे साथ आगे बढ़ो, तुम्हें और कुछ नही करना है, मैं निश्चय ही बूंद को समुद्र मे विसर्जित कर दूंगा।''

ये शब्द सुनते ही मेरे नेत्रों से आंसू बहने लगे, ये आंसू प्रेम के, प्रसन्नता के, हंसी के, भावातिरेक के आंसू थे यह मेरे मन के घावों पर अमृत लेप था। बस वह दिन है और आज का दिन है, मैं अपने पूज्य गुरूदेव से जुड़ा हूं, मेरे लिए सब कुछ मेरे स्वामी निखिलेश्वरानन्द ही है। जिनके पूरे शरीर से देवतुल्य पद्मगंध सी [illegible] होती रहती है, जिनकी वाणी में साक्षात सरस्वती पूर्णता के साथ बैठी हुई [illegible] हृदय भारत के समस्त शास्त्रों का अथाह भण्डार है, वे जब बोलते है, [illegible] अबाध गति से बोलते ही चले जाते है, और उनका प्रत्येक शब्द, [illegible] लिये हुए होता है, उनका स्पर्श पाकर शिष्य और शिष्याएं धन्य [illegible] पने के लिये, उनके दर्शनों के लिये बेतहाशा दौड़े चले आते [illegible] पहुंचते है, तो ऐसा लगता है कि जैसे शीतल छाया में [illegible] सारा दुःख दर्द, तनाव, चिन्ता और परेशानी अपने [illegible] र जोश, उत्साह और उछाह की लहरें, [illegible] [illegible] ना ही जीवन का सौभाग्य होता है, [illegible]

वाली पीढ़ियां हम पर, हम सभी शिष्यों और साधकों पर गर्व के साथ-साथ आश्चर्य करेगी, कि हम श्रीमाली जी के साथ कुछ दिनों तक रहे है, उनकी वाणी को सुना है, उनके प्राणों से एकाकार हुए है।

समझ में नही आ रहा है, कहां से प्रारम्भ करूं, उनका जीवन-आख्यान, जगमग करते ज्योति पुंज की किरणें ही जिस प्रकार उनके बारे में सब कुछ कह देती है, उसी प्रकार पूज्य प्रभु के शब्द, उनका ज्ञान ही उनके बारे में सब कुछ कह देती है। जिनके पास बैठ कर एक असीम शान्ति का अनुभव होता है, जिनके स्पर्श से रोग शोक, शरीर से तो क्या, मन से भी दूर हो जाते है, ऐसे है हमारे पूज्य गुरूदेव निखिलेश्वरानंद जी-जन्हें संसार डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली के नाम से जानता है और इस नाम के पीछे भी उनका ही एक बड़ा रहस्य छिपा है।

ओम नमो नारायणाय

जन्म हुआ तो मां ने नाम दिया ''नारायण'' यह प्रेरणा थी, कि हे देवी! तेरे घर चक्रवर्ती सम्राटों से भी अधिक तेज वाला पुत्र उत्पन्न होगा। मां ने सोचा कि मेरा पुत्र बड़ा हो कर धनी प्रभावशाली व्यक्ति होगा, परिवार सुख वैभव से रहेगा, उसने ऐसा थोड़े ही सोचा था कि यह पुत्र तो बड़ा को कर साधु सन्यासी बन जायेगा और राजाओं का भी राजा होगा। यह अवतार ही था, तब न तो मां ने कुछ विशेष सोचा, न ही परिवार के अन्य सदस्यों ने, बालक नारायण जन्म से ही अन्य

बालकों से बिलकुल अलग था, चार साल की उम्र में मंत्रों का, गीता का संध्या का रुद्राभिषेक का इस प्रकार उच्चारण करता था, मानो कोई सिद्ध पंडित पाठ कर रहा हो, यह ज्ञान उन्हें किसी से प्राप्त करने की आवश्यकता थोड़े ही थी, यह तो उनके जन्म के साथ ही जुड़ा था, उनका तो जन्म ही संसार में एक विराट कार्य के लिए हुआ था, और उन्हें अपने समय में कार्य सम्पन्न करना ही था।

घर वाले चाहते थे कि बालक नारायण बड़ा हो कर अपने पिता की तरह ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पूजा पाठ का अभ्यास कर परिवार का नाम विख्यात करे, उनके लिए अलग से अध्यापक लगाने की आवश्यकता ही कहां थी, घर में ही तो नित्य प्रति वेद मंत्रों की ध्वनि गूंजती थी, नित्य यज्ञ होते थे, सारा कुछ वैदिक वातावरण ही था, दूर दूर से बालक इनके पिता से शिक्षा लेने आते थे, ऐसे वातावरण में पूज्य गुरूदेव के व्यक्तित्व का विकास हुआ, लेकिन उन्हें तो अलग मार्ग बनाना था और यह सब कुछ सही क्रम से चल रहा था, वे अपने पिता से गीता के श्लोकों के बारे में बहस करते, वेदों-उपनिषदों के एक एक श्लोक ऋचाओं के संबंध में उनका तर्क चलता, आखिर को उन्हें यह कहना पड़ा कि बेटा नारायण! मेरे पास जितना ज्ञान है, वह मैनें तुझे बता दिया है, मेरे पास तेरे सब प्रश्नों के उत्तर नहीं है, और यहीं से बालक नारायण के मन में ज्ञान की भूख जाग्रत हुई कि जो कुछ भी सीखना है, ज्ञान प्राप्त करना है, वह पूर्णता तक होना चाहिए, अधूरा ज्ञान मन का नाश करता है।

लेकिन परिवार वाले नारायण को पूरी तरह से समझ नहीं सके, और यह सोचा कि यह बालक कुछ ज्यादा ही ज्ञानी बनता जा रहा है, हर समय शास्त्र, पुस्तकें लिये बैठा रहता है, निरन्तर विभिन्न प्रकार के प्रश्न करता रहता है, यदि इसे गृहस्थी में बांध दिया जाय तो उचित रहेगा, ऐसा सोच कर नारायण का विवाह कर दिया और परमात्मा का चमत्कार कहिये अथवा यह नारायण की ही माया कहिये कि विवाह हुआ भगवती से, ऐसा ही होना था, क्योंकि जहां नारायण है, भगवती को वही विराजमान होना था, यह अद्भुत संगम था, जो कि हजारों हजारों वर्षों के बाद सांसारिक रूप में सम्पन्न हुआ।

विवाह के कुछ वर्षों बाद ही नारायण गृहस्थी में रुक नहीं सके, क्योंकि उन्हें अपने जीवन की एक महा यात्रा सम्पन्न करनी थी, और वह महायात्रा थी हिमालय की; उस यात्रा में अपने पूर्व जन्म के उन संगी साथियों से मिलना था, अपने विभिन्न शिष्यों से मिलना था, ज्ञान और साधना के नवीन स्तर प्राप्त करने थे, इस संसार

के लिए एक नवीन मार्ग देना था, इसलिए एक ही क्षण में सब कुछ छोड़ कर रवाना हो गये वे विशेष यात्रा के लिए, इसका विशेष उद्देश्य था, इसके लिए उन्हें घर परिवार धन वैभव राजसी सुख कोई नहीं रोक सका, क्योंकि उन्हें मालूम था कि मुझे क्या करना है और कैसे करना है, और क्या आवश्यक है, उन्हें जीवन के सारे धर्म निभाने थे, उन्हें सभी विधाओं में पूर्णता प्राप्त करनी थी और इसी दृढ़ निश्चय के साथ उन्होंने अपने कदम आगे बढ़ाये।

जब सांसारिक जीवन जी रहे है, तो उसके नियमों का भी पूरी तरह से पालन होना चाहिए, इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए शिक्षा में भी सांसारिक नियमों के अनुसार पूर्णता प्राप्त की। आजकल ऐसा हो गया है कि अमुक महाराज प्राइमरी तक भी शिक्षा ग्रहण किये हुए नहीं होते है और उनके शिष्य कहते है कि महाराज की तो कुण्डलिनी जागृत हो गई, इसके लिए वे शिक्षा अधूरी छोड़ कर तीर्थ स्थानों, पहाड़ों पर भागते हैं, लेकिन विद्यार्थी नारायण ने शिक्षा पूर्ण रूप से ग्रहण की, विवाह और गृहस्थ के बन्धन भी उनकी शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में बाधा नहीं बने, और इसी क्रम में उन्होंने 'डॉक्टरेट' की उपाधि ग्रहण की, और वह भी महज युवावस्था में जब तक शिक्षा और ज्ञान की नींव मजबूत नहीं बनती तब तक व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से निर्माण नहीं होता, शिक्षा तो मन को चमकाती है, उसके ऊपर लगे हुए

दोषों को घटाती है, एक तर्क बुद्धि ज्ञान बुद्धि को जागृत करती है वही व्यक्ति जिसने ठोस रूप से शिक्षा ग्रहण की हो, आगे चल कर दूसरों को कुछ शिक्षा दे सकता है।

हिमालय का योगी

और इस प्रकार प्रारम्भ हुई पूज्य गुरुदेव की हिमालय की वह महान यात्रा, जिसका वृतांन्त आज भी पढ़ कर रोमांच आता है, और इस यात्रा पर रवाना होने से पहले पूरे परिवार में साफ-साफ कह दिया कि मैंने अपना मार्ग चुन लिया है, जीवन के गृहस्थ धर्म के जिन नियमों को निभाना आवश्यक था वे सभी कार्य मैंने पूरे कर लिये है, एक विशेष लक्ष्य की पूर्ति के लिए मां से आज्ञा मांगी, पिता से आशीर्वाद की अपेक्षा की, माँ की ममता ने रोकने का बड़ा प्रयास किया, लेकिन पिता ने तो बालक नारायण के पैदा होते ही उसकी कुण्डली में देख लिया था कि इसके भाग्य में क्या लिखा है, उन्होंने वचन दिया कि मैं अपना कार्य पूरा कर पुनः इस जीवन मे वापस अवश्य आऊंगा, मेरे पीछे इन बालकों की जिम्मेदारी तेरे ऊपर है, उन्हें श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करना और अपना कर्तव्य निभाते रहना, और योगेश्वर की एक विशेष यात्रा प्रारम्भ हुई, घर परिवार, गांव के सभी लोगों से विदा लेते हुए अकेले एक नये मार्ग पर आगे बढ़ चले, और उस अवसर पर प्रकृति ने भी अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया, सुगंधित बयार बहने लगी, रिमझिम वर्षा होने लगी, सभी के नेत्रों से अश्रु धारा बह रही थी, और पूज्य महाराज सब को हाथ जोड़ते हुए चल पड़े।

गुरू मिलन–सिद्धिया

पूज्य गुरुदेव, जिनका अब तक सांसारिक नाम नारायणदत्त श्रीमाली के नाम से ही विख्यात था, और लोग उन्हें केवल श्रेष्ठ ज्योतिषी हस्तरेखा विशेषज्ञ, मंत्रों इत्यादि के जानकार के रूप में जानते थे, उन्होंने अपनी यात्रा प्रारम्भ की, यात्रा के प्रथम चरण में वे आबू की ओर रवाना हुए वहां उन्हें तांत्रिक अघोरी बाबा मिले, जो श्मशान-सिद्धि में विशेषज्ञ थे, उन्होंने डॉ. श्रीमाली को श्मशान साधनाएं तथा तंत्र का पहला, प्रेक्टिकल ज्ञान प्रदान किया। तत्पश्चात् आगे स्वामी पूर्णानन्द जी से सम्पर्क हुआ, पूर्णानन्द जी ने उन्हें एक विशेष ज्ञान दिया कि जीवन में कुछ मौलिकता है, तो चार बातों का विशेष ध्यान रखे-

1. हठ दुराग्रह, छल एवं बुराई को छोड़ना।
2. साधु या गुरू के प्रति पूर्ण आत्मसम्पर्क।

3. अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं एवं विचारों का गुरू के विचारों में लय।
4. पूर्ण एवं निश्छल श्रद्धा।

वहीं आगे भूत विद्या का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया, साधना में जब तक साधक इन विशेष क्रियाओं का ज्ञान नहीं कर लेता, तब तक वह आगे नहीं बढ़ सकता क्योंकि भूत प्रेत दुष्ट आत्माएं साधक को बाधा पहुंचाती रहती है।

यहां से पूज्य गुरूदेव आगे बढ़े और सीधे गंगोत्री की और यात्रा की वहां मिलन हुआ, स्वामी योगेश्वरानन्द जी से। स्वामी योगेश्वरानन्द ने जो कि शालीग्राम इष्ट की साधना करते थे, और उन्हें 'वायवीय सिद्धि' प्राप्त थी, जिसके आधार पर वे किसी भी वस्तु को अपने स्थान पर बैठें बैठें मंगा सकते थे, लेकिन उन्होंने कभी इस ज्ञान का दुरुपयोग नहीं किया, श्रीमाली जी वहां एक महीने रहे योगेश्वरानन्द जी को मानो भगवत आदेश था कि इन्हें इस विद्या का ज्ञान करा दो, और उन्होंने इस विद्या का ज्ञान दे कर कहा कि अभी तुम्हारी मंजिल बहुत आगे है, बस मेरे पास जो ज्ञान था वह तुम्हे दे दिया।

आगे पूज्य गुरूदेव का कई साधुओं से, तांत्रिकों से मिलन हुआ, और हर एक से उन्होंने कुछ न कुछ सीखा, कई तथाकथित ढ़ोंगी साधु भी मिले लेकिन पूज्य गुरूदेव ने ऐसे लोगों को कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे किसी भी प्रकार के वाद विवाद में पड़ कर अपना लक्ष्य नहीं छोड़ना चाहते थे, और न ही उन्हें लोकप्रियता की इच्छा भी थी, उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि जब तक साधना, एवं सिद्धि में पूर्णता प्राप्त नहीं कर लेता, और जब तक सहस्त्रार चक्र जाग्रत नहीं हो जाता, तब तक साधना में पूर्णतः रत रहूंगा।

परम पूज्य डॉ. श्रीमाली को उनके साधनात्मक जीवन में जिन-जिन से विशेष मुलाकात हुई जिन-जिन से उन्होंने कुछ न कुछ तांत्रिक मांत्रिक ज्ञान प्राप्त किया, उनका वर्णन आगे लिखते हुए मन को प्रसन्नता हो रही है कि आज भी हिमालय की इस भूमि पर इतने बड़े ज्ञानी विराजमान है, इतनी अधिक सिद्धियां भरी पड़ी है।

मां बाबा

यहां डॉ. श्रीमाली चार महीने रह कर मां बाबा से उनके देव आश्रम में शक्तिपात की दीक्षा ली और शक्तिपात ऊर्ध्व-विरेचन अन्तर्चक्षु जिनसे प्राणमय कोष जाग्रत हो जाता है।

पत्थर बाबा

मंत्र शक्ति के अद्‌भुत जानकार और परकाया प्रवेश के पूर्ण विशेषज्ञ, एक ही शरीर एक ही समय में अलग अलग स्थानों पर दिखाई दें, इस विद्या को, 'परकाया साधना' कहते है, इसके अलावा अपनी काया छोड़कर किसी अन्य की काया में प्रवेश करना और पुनः अपनी इच्छा से अपनी काया में वापस आ जाना अत्यन्त कठिन है, यहां पूज्य गुरूदेव ने छः मास निवास किया,।

पंडित जगन्नाथ

जगन्नाथ बाबा गृहस्थ होते हुए भी उच्च कोटि के साधक थे, और उन्हें साधनाओं का प्रायोगिक प्रामाणिक ज्ञान था, यहां पूज्य गुरूदेव काफी समय तक रहे, तथा इनसे कुछ विशेष साधनाएं सीखी जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1. लक्ष्मी साधना — दरिद्रता नाश, लक्ष्मी प्राप्ति व व्यापार वृद्धि आदि में पूर्ण सफलता के लिए।
2. सरस्वती साधना — स्मरण शक्ति बढ़ाने शीघ्र स्मरण करने अथवा शीघ्र साधना पक्ष मे सफलता प्राप्ति हेतु
3. काम्य साधना — प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ण करने के लिए।
4. अंनग साधना — मनोनुकूल पति या पत्नी प्राप्ति केलिए, शीघ्र विवाह के लिए या प्रेम के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए।
5. व्रीह साधना — पौरुष प्राप्ति या नामर्दी दूर करने के लिए या पत्नी रमण में पूर्णता प्राप्त करने के लिए
6. पुत्रेष्टि साधना — पुत्र प्राप्ति के लिए
7. गणेश साधना — उच्छिष्ट गणपति प्रसन्नार्थ
8. हनुमत साधना — पंचमुखी हनुमत प्रसन्नार्थ।
9. विजय साधना — किसी प्रतिस्पर्धा में पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए।
10. शत्रुस्तंभन साधना — शत्रुओं को परास्त करने के लिए
11. सौभाग्य साधना — पूर्ण पति सुख व सौभाग्य प्राप्ति के लिए
12. रोग मुक्ति साधना — किसी भी प्रकार की रोग मुक्ति के लिए।
13. रक्षा साधना — किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग, मारण मोहन उच्चाटन आदि से मुक्ति पाने के लिए।
14. भं साधना — भूत प्रेत पिशाच भय से मुक्ति हेतु
15. सम्यक् साधना — सामाजिक प्रतिष्ठा यश सम्मान के लिए

16.	**श्रव्य साधना**	दूसरों के मन के विचारों को जानना
17.	**पंचांगुली साधना**	पूर्ण भविष्य एवं भूतकाल जानने के लिए
18.	**सहस्त्रार साधना**	पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने के लिए
19.	**चक्षु साधना**	पृथ्वी में गड़े हुए धन, आदि की जानकारी के लिए
20.	**मनृत्व साधना**	मानसिक परेशानियों में पूर्णतः मुक्ति पाने के लिए।

ज्ञान बाबा

विशेष सिद्ध प्राप्त विद्वान । इनसे डॉ. श्रीमाली ने शक्ति तत्व मंत्र साधना, दुर्गा साधना सीखी, भीतर की शक्तियों के पूर्ण जागरण हेतु दुर्गा साधना तो सबसे ज्यादा आवश्यक है।

ऊंकार स्वामी

साबर साधनाएं वर्तमान युग की सबसे प्रमुख साधनाएं है और इनमें पूर्ण भक्ति से सिद्धि प्राप्त अवश्य हो सकती है। डॉ. श्रीमाली ने युवावस्था में ऊंकार स्वामी से कुछ विशेष साधनाएं सीखी, और अध्ययन के दौरान ही उन्हें प्रयोगात्मक तौर पर परखा, पर मंत्र को समझने और उसका परीक्षण करने की रुचि प्रारम्भ से ही डॉ. श्रीमाली में विशेष रूप से रही है, जिससे कि वे स्वयं आगे शुद्ध ज्ञान ही अपने शिष्यों को दें, और उन्होंने जो देखा परखा तथा सत्य अनुभव किया वही अपनी पुस्तकों में लिखा, जिन विशेष साबर साधनाओं का ज्ञान यहां डॉ. श्रीमाली को प्राप्त हुआ वे- (1) शरीर रक्षा साबर साधना (2) रोग निवारण साबर साधना (3) प्रेत बाधा निवारण साबर साधना (4) नवग्रह दोष निवारण साबर साधना (5) विष दूर करने की साबर साधना (6) पेट संबंधी रोग शांत करने की साबर साधना (7) वाक् सिद्धि साबर साधना (8) व्यापार वृद्धि साबर साधना

इसके अतिरिक्त कई अन्य हजारों साबर मंत्रों का गूढ़ विवेचन इसी आश्रम में उन्होंने संपन्न किया।

स्वामी अखंडानन्द

आदि शक्तियों की साधना जितनी आवश्यक है उतनी ही विभिन्न देवी देवताओं की साधनाएं भी आवश्यक है, पंच देव-सूर्य, विष्णु दुर्गा शिव और गणपति की साधनाएं तो आधारभूत साधनाएं है, लेकिन इनकी शक्तियों को प्राप्त कर विभिन्न

देवी देवताओं की साधनाएं जो साधक संपन्न करता है तो उसे भी पूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। केदारनाथ के पास स्वामी अखंडानंद के आश्रम में पूज्य डॉ. श्रीमाली ने जो नवीन साधनाएं सीखी उनमें प्रमुख है (1) उच्छिष्ट गणपति साधना (2) हरिद्रा गणेश प्रयोग (3) महामृत्युंजय साधना (4) सूर्य मंत्र (5) लांगूलास्त्र शत्रुंजय साधना (6) आपदुद्धारक बटुक साधना (7) बटुक भैरव वीर साधना (8) कामदेव साधना (9) क्षेत्रपाल साधना (10) कुबेर मंत्र साधना (11) गायत्री साधना (12) अन्नपूर्णा साधना (13) छिन्नमस्ता साधना (14) बगलामुखी साधना (15) मातंगी साधना (16) धूमावती साधना (17) चण्डिका साधना (18) दक्षिणकाली साधना (19) त्रिपुर भैरवी साधना (20) अष्टलक्ष्मी साधना (21) इंद्राक्षी साधना

मकरन्द स्वामी

ये स्वामी यक्षिणी तंत्र के सम्पूर्ण विशेषज्ञ माने जाते है इनके पास रहकर डॉ. श्रीमाली जी ने विशेष प्रकार की तंत्र साधनाएं सीखी, जिसका व्यवहारिक ज्ञान वर्तमान समय में इने-गिने लोगों को ही है, यहां जो साधनाएं संपन्न की वे है- (1) विचित्रा यक्षिणी साधना (2) भक्षिणी साधना (3) विशाला साधना (4) कालकर्णी साधना (5) शंखिनी साधना (6) चन्द्र साधना (7) शतपत्रि साधना (8) सुलोचना साधना (9) कापालिनी साधना (10) विलासिनी साधना (11) नटी साधना (12) मनोहरा साधना (13) अनुरागिणी साधना (14) भामिनी साधना (15) स्वर्णावती साधना (16) धनदा यक्षिणी साधना (17) अपामार्गी साधना (18) भूत लोचना साधना (19) शशिदेव्य साधना (20) उर्वश्य साधना (21) अष्टकिन्नरी साधना (22) मंजुघोष साधना (23) वार्ताली साधना (24) स्वप्नेश्वरी साधना

घुरन्दु बाबा

यमुनोत्री के आगे भैरव टीला के पास रहने वाले घुरन्दु बाबा विशेष तंत्र सिद्ध माने जाते है, चेटक साधनाओं में वे अद्वितीय है इनसे डॉ. श्रीमाली ने जो साधनाएं प्राप्त की उनमें प्रमुख है- (1) श्मशान यक्षिणी चेटक (2) करालिनी चेटक (3) कालिका चेटक (4) भैरव चेटक (5) लिंग चेटक (6) नरसिंग चेटक (7) मणीभद्र चेटक (8) भूतेश्वर चेटक (9) फेत्कारिणी चेटक (10) चक्षु चेटक (11) रतिराज चेटक (12) सूर्य दर्शक चेटक (13) ग्रहण चेटक (14) प्रेमाकर्षण चेटक (15) मार्ग चेटक (16) रसायन चेटक (17) काली चेटक।

ये सभी चेटक तंत्र साधना के प्रथम स्तर पर प्राप्त नहीं किये जा सकते, इनके लिये गंभीर लगन एवं आत्म रक्षा का पूर्ण उपाय कर ही करने चाहिये। इसके अतिरिक्त डॉ. श्रीमाली को कई अन्य उच्च स्तर के साधुओं, सन्यासियों का सम्पर्क साहचर्य प्राप्त हुआ, हर एक के पास कुछ समय तक रहकर उनका ज्ञान प्राप्त कर आगे अपनी मंजिल की ओर डॉ. श्रीमाली बढ़ते चले गये, इन साधुओं में प्रमुख है - आबू के स्वामी पूर्णानंद जी (2) आबू के स्वामी योगीश्वरानंद (3) लक्ष्मण झूले (ऋषिकेश) के बाबा किंकर बाबा (4) मंडेणा के नंगे बाबा या नागा बाबा (5) मां भैरवी (6) षन्मुखेश्वर स्वामी (7) स्वामी मोहनानंद (8) काश्मीर के शोभना बाबा (9) फकीर स्वामी (10) हिमालय के पाताल बाबा (11) स्वामी गिरजानंद (12) देहरादून के पगला बाबा (13) स्वामी दिगम्बरार्चन (14) अक्षय बाबा (15) नेपाल के कामरूप बाबा (16) नेपाल के त्रिंगु स्वामी (17) बाल योगी गुप्त बाबा (18) गंगोत्री के तीर्थानन्द (19) मां भुवनेश्वरी (20) पालू स्वामी (21) भक्त मुरली चैतन्य

इसके अतिरिक्त भी अन्य कई साधुओं, सन्यासियों एवं ऋषियों के संपर्क में डॉ. श्रीमाली रहे और उनसे सीखा भी, इन सबका ऋण आज भी डॉ. श्रीमाली स्वीकार करते है।

एक विशेष बात हर जगह हुई कि जहां-जहां भी डॉ. श्रीमाली गये वहां उनका पूर्ण स्वागत हुआ उन सबका कहना था कि उन्हें पूर्व सूचना थी कि आप आ रहे हैं, इन सभी साधुओं ने, योगियों ने सहर्ष अपना जो कुछ ज्ञान था डॉ. श्रीमाली को प्रदान कर दिया क्योंकि उन्हें ऐसा आभास हो गया था कि डॉ. श्रीमाली के माध्यम से यह ज्ञान विकसित होकर जन-जन में फैल सकेगा, और इन सभी विद्याओं का विशेष विकास हो सकेगा, और जैसे ही उन्होंने अपनी विद्याएं सिखा दी तो उन्होंने कहा कि प्रिय नारायण! अब तुम यहां से चलो, तुम्हारी मंजिल यह नहीं है अभी तुम्हें बहुत आगे बढ़ना है।

यात्रा के इस क्रम में बढ़ते-बढ़ते श्रीमाली एक अन्तः प्रेरणा से कैलाश पर्वत की ओर बढ़े, उन्हें पूरा विश्वास था कि मेरी मंजिल वही है और वास्तव में यह सत्य भी था क्योंकि परम पूज्य सच्चिदानंद जी महाराज का निवास भी तो वहीं था, जो कि योगियों के भी योगी है जिनके बारे में प्रमुख योगियों का मन्तव्य निम्न प्रकार से है-

(1) योगीराज सच्चिदानंद विश्व की अन्यतम विभूति है, इस विश्व को उन पर गर्व है। - स्वामी ज्ञानामृतानंद

(2) स्वामी सच्चिदानंद वस्तुतः योगीराज है, जिन्हें इस विश्व में कुछ भी अप्राप्य नहीं- बाबा श्यामदास

(3) योगीराज के सामीप्य का एक क्षण विश्व की सर्वोच्च निधि से भी ज्यादा मूल्यवान है।

-स्वामी चैतन्य

(4) योगीराज सच्चिदानंद चिर युवा है, चिर श्रेष्ठ है, विश्व प्रसिद्ध अद्वितीय विभूति है, मैं अपने जीवन का समस्त पुण्य, समस्त साधना, समस्त तपस्या भेंट करने को तैयार हूं, यदि वे मुझे पांच मिनट साथ रहने का अवसर दें -स्वामी अजरा

(5) स्वामी सच्चिदानंद के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है- काश! वे मेरे गुरू होते-योगीराज प्रणवानंद

संतों की कोई जाति नहीं होती ज्ञान ही उनका सब कुछ होता है, और योगीराज स्वामी सच्चिदानंद के संबंध में स्वीकार किया है कि वे विश्व के सबसे अधिक पूजनीय योगी, संत और महात्मा है जिनका शिष्यत्व प्राप्त करना कई जन्मों का पुण्योदय माना जाता है।

अद्भुत गुरू शिष्य मिलनः-

आज पूरे विश्व में सच्चिदानंद जी महाराज को डॉ. श्रीमाली के शिष्य दादा गुरू के नाम से जानते है और डॉ. श्रीमाली को गुरूजी कहकर बुलाते है, उन दोनों का आपसी मिलन भी गुरूदेव के हिमालय प्रवास के दौरान अदभुत रहा, अपने गुरू के पास डॉ. श्रीमाली ने सबसे अधिक समय बिताया, इस संबंध में जब जब उनसे पूछा जाता है वे एक आनन्द-भाव में खो जाते है अपने गुरू का ध्यान करते ही उनके चेहरे की रेखाएं खिल उठती है, और वे कह उठते है कि मेरे जीवन के वे वर्ष ही सर्व श्रेष्ठ वर्ष है जो मैंने अपने गुरू सच्चिदानंद जी महाराज के साथ व्यतीत किये, उन दिनों की तो बात ही कुछ और है।

वास्तव में जब शिष्य को गुरू के पास ही पूर्ण आनन्द मिले, तो समझिये कि वही सच्चा शिष्य है। पूज्य गुरूदेव कहते है कि शिष्य सही अर्थों में शिष्य कहलाने का तभी अधिकारी हो सकता है-

शिष्यःकुलीनः शुद्धात्मा पुरुषार्थ परायणः।
अधीतवेदः कुशलः दूरमुक्त मनोभवः ॥
हितैषी प्राणिनां नित्य मारितकस्थक्त नास्तिकः।

स्वधर्म निरतो भक्त्या पितृ मातृ हितोधतः॥
वामनः कायुसुभिर्गुरू शुश्रुषणे रतः ।
त्यक्ता भिमानो गुरूषु जाति विद्या धनादिभिः॥
गुर्वाज्ञा पालनार्थ हि प्राण व्यय रतोधतः।
विहत्य च स्वकायाशि गुरू कार्यरतः सदा॥
दारावन्निवसेधस्तु गुरो भक्त्या सदा शिशुः।
गुर्वन्राज्ञा दिवा रातौ गुरू भक्ति परायणः॥
आज्ञाकारी गुरो शिष्यो मनोवाक्काय कर्मभिः।
यो भवेत्स च सदा ग्राहा तेतरः शुभ कांक्षय॥
मंत्र पूजा रहस्यानि यो गोपयति सर्वदा।
त्रिकालं यो नमस्कुर्यादा गमाचार तत्ववित्॥
स एव शिष्य कर्तव्यो नेतरः स्वल्प जीवनः।
एतादृश गुणोपेतः शिष्यो भवति नापरः॥

शिष्य के लिये यह आवश्यक है कि वह सदैव पुरुषार्थ, परिश्रम करने में तत्पर रहे, वेदों के बारे में जिज्ञासा एवं ज्ञान हो तथा उसे जो भी कार्य सौपे, सुघड़ता तत्परता एवं चातुर्यता से उसे संपत्र करें। इसके साथ ही इस बात की शिष्य में नितांत आवश्यकता है कि वह कामवासना से दूर हो, तथा काम क्रोध लोभ जैसे दुर्गुणों को काफी दूर रखता हो।

शिष्य समस्त प्राणियों के हित को चाहने वाला, आत्महित चिन्तक, आस्तिक तथा प्रभु चरणों में पूर्ण श्रद्धा रखने वाला हो, जो अपने धर्म को कटट्रता से पालन करता हो तथा जिसकी माता पिता के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति हो। योग्य शिष्य की पहली और आखिरी कसौटी यह है कि वह गुरू के प्रति घमंड प्रदर्शित न करें, जाति, कुल या धन की वजह से गुरू से अपने को सर्वोपरि न समझे तथा स्वयं के शरीर से, मन से तथा धन से गुरू के प्रति पूर्ण समर्पित 'त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेवं समर्पयेत्' की भावना उसके विचारों में हो।

शिष्य पद का वही अधिकारी हो सकता है, जो अपने गुरू की आज्ञा को प्राण समर्पित करके भी पूर्ण करें, परन्तु फिर भी मन में किसी प्रकार का दर्प या घमंड न आवे। अपने कार्यों को पूर्ण करें। गुरू के पास नित्य दासवत् विनम्र रहकर सीखने को सचेष्ट रहे। मन, वाणी एवं कर्म से गुरू की आज्ञा का पालन करें तथा नित्य गुरू के चरणों में बैठकर वे जो भी सिखावें, उसे श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर मनन करें।

शिष्य के लिये यह भी आवश्यक है कि वह गुरू-मुख से प्राप्त रहस्यों को गोपनीय रखें और बिना गुरू की आज्ञा के उसे उजागर न करें और न प्रकट ही करे-

इस प्रकार के गुणों से संयुक्त ही वह सच्चा शिष्य पद प्राप्त करने का अधिकारी होता है।

जब तक इन सब गुणों का विकास नहीं हो पाता, तब तक शिष्य भी पूर्ण रूप से सिद्धि प्राप्त करने का अधिकारी नहीं रहता और यदि गुरू संकात्तु शिष्य को कुछ विद्याएं सीखा भी दें, तो भी उस शिष्य के पास सिद्धियां स्थायी रूप से नहीं रह सकती, और गुरू तो शिष्य की परीक्षा लेते ही रहते है।

डॉ. श्रीमाली जब अपने गुरू सच्चिदानंद जी से प्रथम बार इस सांसारिक जीवन में मिलने गये तो यह सब कुछ एक विचित्र प्रेरणा के अन्तर्गत ही था, जिस प्रकार शिष्य गुरू से मिलने के लिये दौड़ पड़ता है उसी प्रकार गुरू भी जिस शिष्य को बुलाना चाहते है तभी शिष्य के भीतर एक प्रेरणा जागृत होती है, और वह चल पड़ता है।

आज पूज्य गुरूदेव के समक्ष भारत वर्ष से हजारों ऐसे व्यक्ति मिलने आते है जो कि आकर यह कहते है कि बस पूज्य गुरूदेव की पुस्तक पढ़ी अथवा चित्र देखा तो लगा कि हमें हमारी मंजिल मिल गई, और हमें डॉ. श्रीमाली से ही दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

डॉ. श्रीमाली की दीक्षा - नवप्राण प्रवाह

डॉ. श्रीमाली ने अपने जीवन में पूर्ण दीक्षा अपने गुरू स्वामी बाबा जी से ही प्राप्त की, और यह दीक्षा उन्हें अपने गुरू के आश्रम में जाने के कुछ दिनों बाद ही प्राप्त हो गई, वहां परीक्षा लेने जैसा कुछ था ही नहीं, क्योंकि यह गुरू शिष्य का मिलन ही अनोखा था उस समय परमहंस स्वामी जी की कुटिया में शीतल प्रकाश छाया था और परमहंस स्वामी जी के चारों ओर वह तेजस्वी प्रकाश-किरीट दिखाई देता है, वहां कुंडलिनी जागरण का प्रथम अध्याय पूर्ण हुआ और दादा गुरू परमहंस स्वामी जी महाराज ने अपना ज्ञान सिद्धियां सौंप दी और कहा-आज मैं तुम्हें नया नाम देता हूं।

"निखिलेश्वरानंद"
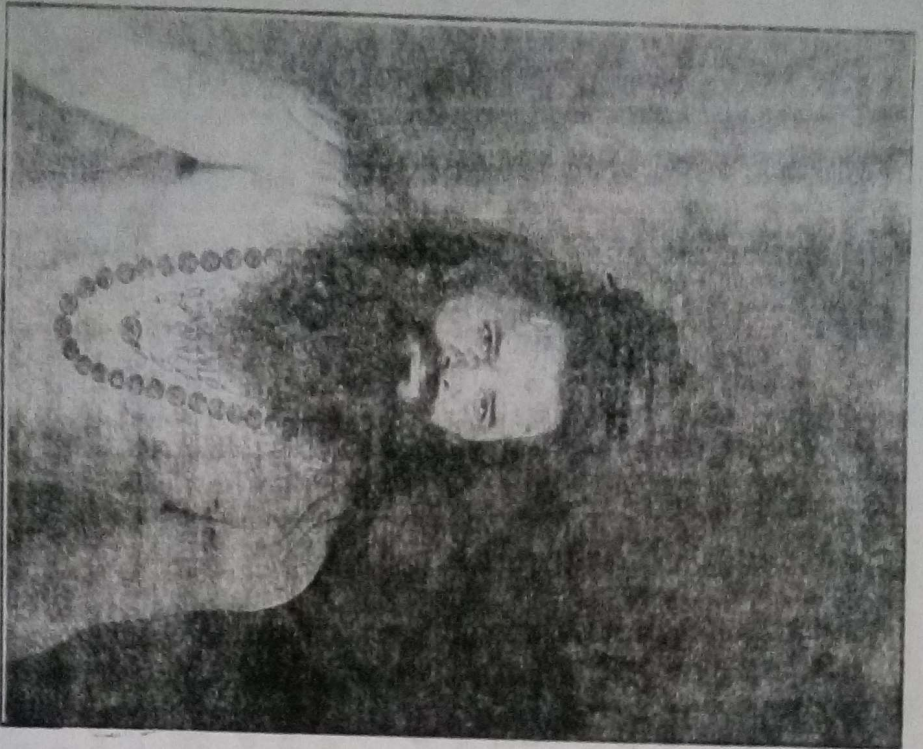
निखिल का तात्पर्य है- सम्पूर्ण, समस्त और आज तुम्हें इस संसार का साधना का वह पूर्ण ज्ञान प्राप्त है इस कारण तुम्हें अब यहां भटकने की आवश्यकता नहीं, मैंने तुम्हें दीक्षा प्रदान कर दी है, क्योंकि दीक्षा से ही गुरू शिष्य के बीच वह तार जुड़ता है, जिससे अनन्त विद्युत प्रवाह सहज प्रवाहित होता रहता है, दीक्षा के बिना शिष्य, बिना डोर की पतंग है जिसे हवा अपने झोके में कहीं भी बहा कर ले जा सकती है। वहां नियंत्रण नहीं है, सफलता की ओर बढ़ने का मार्ग नहीं है, इसीलिये

तो दीक्षा द्वारा चैतन्य गुरू शिष्य के प्राण तत्व जागृत करते है, और जो गुरू स्वयं ब्रह्म से साक्षात्कार कर चुके हो, जिनका आंतरिक शरीर तो क्या बाह्य शरीर भी तेज मे भरा हो, वही दीक्षा देने का अधिकारी है।

परमहंस गुरूदेव स्वामी जी ने अपने शिष्य निखिलेश्वरानंद को आदेश दिया कि सिद्धाश्रम में विराजमान सभी योगियों की यही इच्छा है कि तुम पुनः इस संसार के धर्म में जाओ, और सिद्धाश्रम का ज्ञान जन-जन में बिखेरो, तुम्हारे ज्ञान के लिये धरती प्यासी है यही हम सब का आशीर्वाद है।

सिद्धाश्रम

सिद्धाश्रम ऐसा महान आश्रम है जो आध्यात्मिक पुनीत स्थली है किसी भी गुरू का कोई शिष्य हो, जिसने भी साधना का थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त किया हो उसे पूछा जाय कि तुम्हारी जीवन की सबसे बड़ी इच्छा क्या है तो यही उत्तर प्राप्त होगा कि "सिद्धाश्रम गमन" और जब साधक अपनी साधना में अमरत्व सिद्धि प्राप्त कर शरीर अथवा देह त्याग के पश्चात यही पहुंच जाता है तो वह स्वयं दिव्य होकर आने वाली पीढ़ियों का कल्याण कर देता है।

मीलों लम्बा हरियाली से ढका हुआ सिद्धाश्रम, जिसके चारों ओर कैलाश पर्वत बर्फ से ढका है, सिद्धाश्रम जिसे ब्रह्मा जी के आदेश से स्वयं विश्वकर्मा ने अपने हाथों से निर्माण किया, विष्णु ने भूमि प्रकृति और वायुमंडल को सजीव सप्राण संचेतनायुक्त बनाया और भगवान शंकर की कृपा से यह अजर अमर है, जिससे यहां रहने वाले किसी भी योगी, सन्यासी को दुर्बलता, वृद्धावस्था प्राप्त नहीं होती क्योंकि यह तो अमृत का दिव्य धाम है।

और इसके मध्य में स्थित मीलों लम्बी सिद्ध योगा झील, जिसका पानी स्वच्छ एवं निर्मल है, इस झील में स्नान करने मात्र से ही कायाकल्प हो जाता है शरीर की दुर्बलताएं वृद्धता समाप्त हो जाती है, शरीर पुनः युवावस्था प्राप्त करता है और यह सम्पूर्ण आश्रम दादा गुरू सच्चिदानंद महाराज जी का आश्रम कहलाता है।

चारों ओर पत्तों से ढ़की पर्ण-कुटियाएं हजारों प्रकार के सुगन्धित पुष्पों की बेलें, स्फटिक शिलाओं पर बैठे योगी, सन्यासी जहां उन मनुष्यों को इतिहास पुरुषों को देखा जा सकता है जो पुराणों में वर्णित है। वहां रहकर देह से मन से एक पूर्णता का भाव ही प्राप्त होता है वह भूमि है "सिद्धाश्रम"।

महान योगियों की तपोभूमि सिद्धाश्रम, जहां विश्वामित्र, वशिष्ठ, शंकराचार्य, अष्टावक्र, परमावतार बाबा जी, देवहरा बाबा जी, मां आनन्दमयी जैसे महान योगी तपस्वी विश्व कल्याण की भावना से विश्व में आकर पुनः सिद्धाश्रम को प्रस्थान कर गए, वह महान संस्था केवल एक संस्था नहीं अपितु जीवन का दर्शन है, एक सहज आनन्द पूर्ण जीवन की एक क्रिया है।

जिसने अपने स्वयं के शरीर को जीवन की तपस्याओं, साधनाओं, सिद्धियों से तपाया हो, उनकी वाणी में जो आधार होता है वह सीधे ह्दय पर चोट करता है, एक नाड़ी चक्र को जाग्रत करता है, मस्तिष्क में नये विचारों और पुराने विचारों के बीच संघर्ष कराता है और हम सबने यह अनुभव किया है परम पूज्य गुरूदेव की वाणी सुनकर केवल उनकी ओर निहार कर।

सिद्धाश्रम केवल एक संस्था नहीं है, यह एक आन्दोलन है, मानव जाति का, उसकी श्रेष्ठता के लिए और उसकी इकाई है एक साधक और वह हैं आप स्वयं, इस इकाई को अन्य इकाइयों के साथ जुड़ कर क्या करना है, और किस प्रकार करना है इसका निर्णय तो आपको स्वयं लेना होगा।

साधना के परमतत्व का सत्यम् शिवम् सुन्दरम् स्वरूप है, यह सिद्धाश्रम; लेकिन क्या हर कोई सिद्धाश्रम पहुंच सकता है, ज्यादा से ज्यादा मानसरोवर तक का चक्कर लगाकर वापस आ जाते है, क्योंकि सिद्धाश्रम पहुंचने के लिये साधना की शक्ति आवश्यक है और वह भी ऐसे गुरू के सानिध्य में रहकर साधना करे, जिन्हें स्वयं सिद्धाश्रम का आशीर्वाद प्राप्त हो, जो स्वयं सिद्धाश्रम में विचरण किये हुए हो और सतगुरूदेव निखिलेश्वरानंद जी की तो तपोभूमि साधना भूमि सिद्धाश्रम ही रहा है, पूज्य गुरूदेव तो सिद्धाश्रम से शिष्यों के बीच विशेष प्रयोजन हेतु ही सिद्धाश्रम के योगियों के निवेदन से पधारे है।

सिद्धाश्रम साधक परिवार:

जब जब भी एक संक्रान्ति काल विश्व में आता है, तब तब एक महान आत्मा का उदय होता है, उसे अपने आने की कोई घोषणा नहीं करनी पड़ती, जब सूर्य उदय होता है तो कोई घोषणा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सूर्य के उदय होने के साथ ही रोशनी की पहली किरण फूटती है और फिर धीरे-धीरे उसकी जगमगाहट से सब कुछ आलोकित हो जाता है। राम हों अथवा कृष्ण, महावीर हों अथवा बुद्ध, ईशा हों या सुकरात या मुहम्मद, सभी ने तो मानव जन्म लिया एक
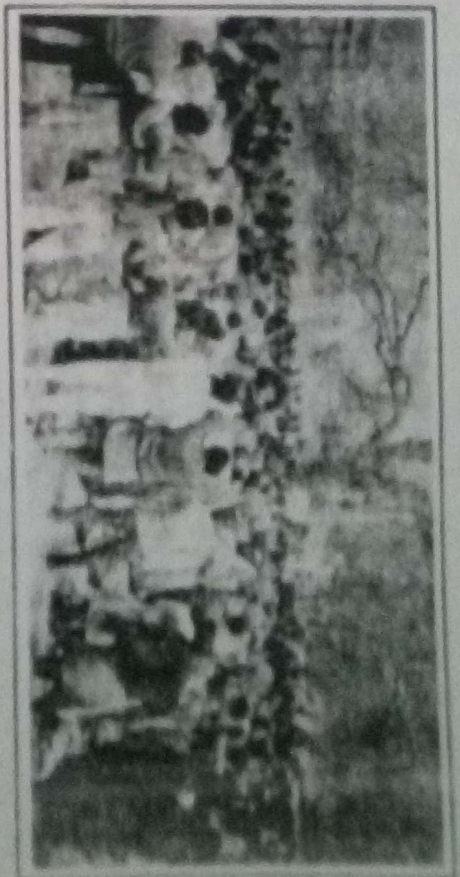
मानव की तरह व्यवहार किया और अपने जीवन में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए पूरे विश्व को मार्गदर्शन दिया, इनमें से किसी को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि उनकी पूजा की जाय, उनको समझा जाय, उन्होंने तो अपने कार्यों से ही स्पष्ट कर दिया कि इस मनुष्य जीवन को किन ऊंचाइयों तक ले जाया जा सकता है और जीवन का श्रेष्ठ मार्ग कौन सा है।

वन्दे निखिलेश्वरम् शिवम्

पूज्य गुरूदेव की महिमा के बारे में लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है, उनका तो पुरा जीवन गृहस्थ रूप में, संन्यास रूप में और पुनः गृहस्थ में एक विशेष कल्याणकारी भावना हेतु, एक नव चेतना हेतु ही व्यतीत हुआ, जिस प्रकार घने वृक्ष की छाया तले बैठ कर छाया का आनन्द लिया जा सकता है, उसी प्रकार पूज्य गुरूदेव के वरदहस्त तले उनके जीवन दर्शन तले एक अपार आनन्द का रोम-रोम में अनुभव किया जा सकता है.

उस समय तो शब्द आवश्यक नहीं होते, केवल विचारों का शांत प्रवाह भीतर ही भीतर चलता है, आने वाली पीढ़ियां यह विश्वास नहीं करेंगी कि श्री निखिलेश्वरानंद जी जैसा महान व्यक्तित्व विचरण करता था और उनके साथ रहने का आनन्द, उनकी पूजा अर्चना का आनन्द, उनके प्रेम और प्रवचनों का आनन्द एक दो को नहीं हजारों-लाखों को प्राप्त हुआ था।

साधक बनिये—पहला कदम

यह तो आपके जीवन का पहला अध्याय है, साधनात्मक चिन्तन को अपने जीवन में उतार लीजिये और याद रखिये कि आप जो कार्य इस संबंध में कर रहे हैं, जिसमें आपका व्यवहार, चिन्तन, गुरू भक्ति सभी सम्मिलित है, उसे हजारों लोग सूक्ष्मता से देख रहे हैं, केवल इसे शब्दों से प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है, इसे प्रकट करना है, अपने कार्य से, अपने व्यवहार से अपने चिन्तन से और हर समय याद रखना है कि मैं उस पथ पर अग्रसर हूं जिस सिद्धाश्रम महापथ पर महान योगियों के पदचिन्ह अंकित हैं, हो सकता है प्रारम्भ में कुछ कम सफलता मिले, सांसारिक दृष्टि से उपेक्षा मिले, लेकिन याद रखे कि आपके साथ हिमालय सदृश महान व्यक्तित्व पूज्य गुरूदेव खड़े हैं। आपको केवल अपना कार्य करना है और जब मार्ग निश्चित है तो आगे का ही चिन्तन करना है।

सम्बन्धों में विस्तार कीजिये

परिवार में जिस प्रकार आपके संबंध जन्म के साथ ही निश्चित हो जाते हैं, उसी प्रकार सिद्धाश्रम साधक परिवार भी एक परिवार है, जहां विशेष चिन्तन युक्त एक ही गुरू के विभिन्न शिष्य आपस में मिल बैठ कर चिन्तन करते है, इस प्रकार के संबंधों का विस्तार होना आवश्यक है, क्योंकि यही एक ऐसा स्थान है, जहां आप अपना सांसारिक घमण्ड भूल कर शुद्ध चिन्तन प्रारम्भ कर सकते है। याद रखिये गुरू भाइयों में जो स्नेह होता है, वह गुरू भक्ति का ही अंग है, इस परिवार में सबको साथ लेना है, केवल एक अलग कोने में बैठ कर चिन्तन करने से कोई लाभ नहीं है। विचारों का आदान-प्रदान, नये सदस्यों की वृद्धि ही तो इस परिवार का मुख्य अंग है, इसमें कम बोलने वाले भी होगें, कुछ ज्यादा बोलने वाले होगें, कुछ आलोचक भी होगें, परिवार का सदस्य बनने के साथ ही आपका कर्तव्य है कि सबकी बातों को ध्यान से सुनें, धैर्य के साथ शांत मन से आलोचनाओं का उत्तर दें तथा विरोधी विचारों वाले व्यक्तियों को भी अपने साथ जोड़े ।

आज ऐसे हजारों सिद्धाश्रम साधक परिवार भारतवर्ष के हर प्रदेश में छोटे-छोटे गांवों में, शहरों में बन रहे है, उन्हें भी अनुभूतियां प्राप्त हो रही है उनकी भी श्रद्धा एवं भक्ति उतनी ही है, जितनी यहां गुरू शक्ति पीठ में उपस्थित साधकों की। नींव का पत्थर बनने में ही तो श्रद्धा एवं समर्पण है।

आने वाले समय पर विचार कर पूज्य गुरूदेव ने एक विशेष व्यवस्था की है, प्रथम तो यह कि इस संगठन की प्रत्येक इकाई अपने आप में स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करेगी। सभी सदस्य व्यवस्था के लिए मिल कर कार्य करेंगे, केवल व्यवस्था हेतु इकाई अध्यक्ष इत्यादि का सर्व सम्मति से चयन कर लिया जायेगा इस हेतु कुछ विशेष नियम बनाये गये है, जिनको पालना अत्यन्त आवश्यक है।

(1) प्रत्येक साधक पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करें, और उनसे अनुरोध कर कार्य करे।

(2) अपने अपने नगर में ''सिद्धाश्रम साधक परिवार'' की स्थापना करें और उसके लिए अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री आदि का चयन करें, साथ ही इसी नाम से बैंक एकाउन्ट खोले और उसमें प्रारम्भ में सभी सदस्य ''डोनेसन'' के द्वारा कुछ द्रव्य जमा करें जिससे कि कार्य सुचारू रूप से गतिशील हो।

(3) प्रत्येक साधक पत्र लिखते समय ऊपर '' श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नम:'' पंक्ति को अवश्य लिखें।

(4) प्रत्येक साधक केन्द्रीय समिति से सिद्धाश्रम साधक परिवार का बैज प्राप्त कर लें और मीटिंग के समय उसे अवश्य लगाएं।

(5) प्रत्येक साधक दूसरे साधक से मिलते समय या टेलीफोन पर बात करते समय प्रारम्भ और अन्त में ''जय गुरुदेव'' शब्द का उच्चारण अवश्य करें।

(6) प्रत्येक नगर के ''सिद्धाश्रम साधक परिवार' की स्थापना होने पर लेटर पेड बना लें, उसमें ऊपर सिद्धाश्रम साधक परिवार ''छपा हो, तथा एक तरफ स्थानीय कार्यालय का पता हो तो दूसरी तरफ कार्यालय जोधपुर का भी पूरा पता प्रकाशित होना अनिवार्य है।

(7) प्रत्येक साधक सप्ताह में या महीने में जहां मीटिंग हो वहां अवश्य जायें और कीर्तन आदि में मनोयोग पूर्वक भाग लें।

(8) अपने खर्च पर आप अपनी अनुभूतियों को प्रकाशित कराकर वितरित करें, साथ ही वहां के स्थानीय पत्रों में भी इस प्रकार के विज्ञापन या लेख लिख कर चेतना पैदा करें।

(9) चौबीसों घंटे गुरु मंत्र का जप करते ही रहें, उठते-बैठते, खाते-पीते, अहर्निश गुरू मंत्र जप चलता ही रहें।

(10) हर गुरूवार को समस्त साधक किसी एक गुरु भाई के यहां उपस्थित होकर सामूहिक गुरु पूजन एवं सप्ताह भर की क्रियाओं का लेखा जोखा लें, सब साधनात्मक विचार विमर्श करें।

(11) यह संभव नहीं हो तो हर मास की 21 तारीख को अवश्य ही एकत्र होकर कार्य करें प्रीतिभोज का आयोजन करें जिसमें सभी समान रूप से सहयोग दें, तथा मीटिंग की सूचना केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य भेजें।

(12) प्रत्येक हर समय यह याद रखें कि मुझे अपने परिवार में वृद्धि करनी है, नये सदस्यों का आव्हान करना है और जो संकल्प लें उसका पूरा-पूरा पालन करें।

(13) जब भी संभव हो, गुरुदेव से भेंट करने जोधपुर अवश्य आएं, और यह कार्य कम से कम तीन महीने में एक बार अवश्य ही हो।

राष्ट्रदूत

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली फाउण्डेशन इन्टर नेशनल

सिद्धाश्रम साधक परिवार

यह सिद्धाश्रम साधक परिवार आने वाले समय में ऐसी महान संस्था का रूप ले लेगा कि हम भावी पीढ़ियों के लिए एक विशेष द्वार और मार्ग बनाकर जायेंगे कई स्थानों पर तो निखिल धाम सिद्धाश्रम भवन बना दिये गये है, जहां स्थायी रूप से कार्य किया जाता है, और यह सब कार्य केवल सहयोग से ही संपन्न हुआ है।

सिद्धाश्रम साधक परिवार की यह महान संस्था जिसके उद्देश्य पवित्र एवं विश्व कल्याण की भावना से युक्त है। गुरु आशीर्वाद तले निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। जहां नित्य प्रति गुरु की पूजा होती है वहां भगवान का वास होता है। शिष्यों की गुरु के प्रति ऐसी समर्पण भावना केवल सिद्धाश्रम साधक परिवार में ही संभव है। यह सिद्धाश्रम के योगियों के होने का सद्गुरु निखिलेश्वरानंद का ही पुण्य प्रताप है कि शिष्यों को एक महान शांति का अनुभव होता है, उन्हें यह ज्ञात है कि उन्हें अपनी मंजिल मिल गई है, और अब हमें जीवन किस प्रकार से जीना है उनके जीवन का उद्देश्य क्या है? यह सब स्पष्ट है।

सिद्धाश्रम साधक परिवार ही एक मात्र ऐसी संस्था है जहां सभी गुरु भाई समान रूप से एक साथ बैठकर अपनी-अपनी पूजा साधना करते हैं, न कोई पद का झगड़ा न किसी को अपने धन का घमण्ड, यहीं वास्तव में "गोविन्द त्वदियम वस्तु तुभ्यम समर्पणम्" की भावना का साकार रूप देखने को मिलता है।

और विशेष बात जिस शिष्य ने भी पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली है वह अपने सभी कार्यों में पूज्य गुरुदेव से निर्देश प्राप्त करता है, जब भी वह साधना में बैठकर गुरुदेव को याद करता है तो गुरुदेव उसके पास अपने सूक्ष्म रूप में अवश्य पहुंचते है, अपने शिष्य को संकट में मार्ग दिखलाते है। शिष्य जब पूर्ण श्रद्धा भक्ति से गुरु के प्रति समर्पित हो जाता है तो गुरुदेव भी उसे सौ गुना अपनी शक्ति का प्रसाद अवश्य देते है।

मन्त्रार्थी सफलासन्तु

जब भी कोई संस्कृति अपना मूल मार्ग छोड़कर अन्य संस्कृतियों का समावेश कर लेती है तो उस संस्कृति में विकृति अवश्य आ जाती है। भारतीय संस्कृति यदि वर्तमान युग के इतिहास नेताओं का कहा मान लें तो भी सिन्धु घाटी को यह आर्य सभ्यता कम से कम आठ हजार वर्ष पुरानी अवश्य है। इस संस्कृति में एक समन्वय भाव था, पवित्रता की आचार विचार में शुद्धता थी। कार्य का उचित विभाजन था, आचार्य गुरु शिक्षक का सम्मान था, जीवन के निश्चित सिद्धान्त थे, इसी कारण यह

आर्य संस्कृति उच्चता के शिखर पर पहुंची, क्योंकि यहां इस भारतीय तपो भूमि पर महान ऋषि मुनि हुए, जो कि वास्तव में वैज्ञानिक विचारक ज्ञाता ही थे। स्थान-स्थान पर आश्रम थे शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था, स्त्री पुरुषों को समान रूप से उन्नति के अवसर थे।

वह महान संस्कृति कहां खो गई? इसका मूल कारण यह था कि हमने अपना शुद्ध मार्ग खो दिया, मुस्लिम शासन और तत्पश्चात अंग्रेजी शासन ने एक गुलामी की भावना भर दी, याद रहे कि संस्कृति गुलाम नहीं हुई, यहां रहने वाले लोग गुलाम हो गये। मुस्लिम और अंग्रेजों को मालूम था कि जब तक इस सिन्धु देश भारत के वासियों को इनकी संस्कृति से च्युत नहीं कर दिया जाता, तब तक हम इन्हें गुलाम नहीं बना सकते इसलिये उन्होंने अपनी नकली संस्कृति यहां फैलानी प्रारम्भ कर दी, और इसका क्या परिणाम हुआ? आप सब जानते है। जहां हर गांव शहर में वेद मंत्रों की ध्वनि गूंजती थी, आश्रमों में यज्ञ की ज्वाला प्रज्वलित होती थी, नित्य प्रति लोग संध्या वंदन कर अपना कार्य प्रारम्भ करते थे वहां आलस्य, धर्म हीनता संकीर्णता ने स्थान ग्रहण करना शुरू किया और इस विकृति के परिणाम स्वरूप आज यह स्थिति हो गई है कि कभी पूरे विश्व में समृद्ध रहा यह देश, सबसे गरीब देशों की श्रेणी में आ गया।

मंत्र और तंत्र तो हमारी संस्कृति की तरह महान आभूषण थे और जो ज्ञान महाग्रन्थों में वेदों उपनिषदों पुराणों में बिखरा पड़ा है, उसका सौंवां हिस्सा भी प्रयोग में ले लिया जाय तो भारत का कल्याण हो सकता है।

यह उद्देश्य दिखने में जितना सरल है वास्तविक रूप से उतना ही कठिन है, क्योंकि अंग्रेजी गुलामी का जो जहर लोगों ने अपने दिमाग में भर दिया उसे हटाने को लोग तैयार ही नहीं थे क्योंकि उनका शरीर ही नहीं मस्तिष्क भी दूषित हो गया था और जब पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी महाराज अपनी हिमालय यात्रा और सिद्धाश्रम यात्रा के पश्चात पुनः इस सांसारिक जीवन में आये तो उन्होंने पूरे भारत वर्ष का भ्रमण किया, और जो जो उन्होंने देखा उसको देखकर उन्हें दुःख हुआ लेकिन इस स्थिति से वे विचलित नहीं हुए और उन्होंने एक संकल्प लिया कि मैं मंत्र और तंत्र की सार्थकता पुनः प्रतिष्ठित करूंगा और जब तक मेरा कार्य पूरा नहीं हो जायेगा तब तक मैं सिद्धाश्रम नहीं जाऊंगा, अपने कार्य पूर्ति के लिये मैं पूरे भारत वर्ष में ऐसे हजारों शिष्यों को तैयार कर दूंगा जो कि मेरे बाद भी यंत्र मंत्र की अखण्ड ज्योति जीवन्त रखेंगे।

संकल्प शक्ति

और यह संकल्प भारत के लिये कष्ट भोगते हजारों लाखों लोगों के लिये एक वरदान सिद्ध हुआ क्योंकि इसी संकल्प के तहत पूज्य गुरुदेव ने एक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया और इसका नाम रखा "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" इस संबंध में उस समय पूज्य गुरुदेव को कई लोगों ने कहा कि मंत्र तंत्र यंत्र नाम रखना उचित नहीं है, क्योंकि इस संबंध में लोगों को बहुत सी भ्रान्तियां है, ढ़ोगी साधु सन्यासियों ने इस विद्या का बड़ा ही विकृत रूप समाज के सामने उत्पन्न कर दिया है, लेकिन गुरूदेव अपने निश्चय से बिलकुल नहीं डिगे, उन्होंने कहा कि जो सत्य है वही शिव है और जो शिव है वही सुन्दर है और याद रखों कि सत्य ही सिद्ध होता है और मैं सिद्धाश्रम का वासी सत्य को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करूंगा।

पूज्य गुरुदेव का सम्मान

पूज्य गुरुदेव कहते है कि मेंरे कुछ शिष्य तैयार होकर साधना की अलख ज्योति जला सकें, और अपना जीवन भारतीय संस्कृति की प्राचीन विद्याओं की प्रतिष्ठा में समर्पित कर दें, तो यह मेरा सबसे बड़ा सम्मान होगा।

जो हीरॉ होता है उसे कितना ही छिपाया जाय वह अपनी आभा प्रगट करके ही रहता है, केवल पुस्तकें पढ़कर केवल गुरुदेव का चित्र देखकर अथवा अपने मन में एक विचित्र अनुभूति अनुभव कर देश-विदेश से साधक लम्बी-लम्बी यात्राएं कर दर्शन मात्र हेतु पूज्य गुरुदेव के दरबार गुरुधाम जोधपुर पहुंच ही जाते है।

योगियों का सम्मान करना हमारी प्राचीन परम्परा रही है, और आपसी राजनीति, भाई-भतीजा के युग में भी योगियों का सम्मान होता है, यह बड़ा ही सुखद विषय है। पूज्य गुरुदेव तो जहां-जहां भी यात्रा में जाते है वहां जनता जयजयकार कर उन्हें अपने हृदय में बिठा लेती है, यह सबसे बड़ा सम्मान है।

(1) सन् 1989 को भारत के वर्तमान राष्ट्रपति डॉ0 शंकरदयाल शर्मा द्वारा नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में पूज्य गुरुदेव को "समाज शिरोमणी" उपाधी भेंट की गई, और इस उपाधि पत्र में लिखा गया कि:-

समाज शिरोमणी
राष्ट्रीय पुरस्कार

भारत के उपराष्ट्रपति
महामहिम डॉ० शंकर दयाल शर्मा
के कर कमलों से
डा० नारायणदत्त श्रीमाली को
ज्योतिष एवं प्राचीन भारतीय विद्याओं के क्षेत्र में
विशिष्ट योगदान के लिये
वर्ष १९८९ के
राष्ट्रीय पुरस्कार से
सम्मानित किया गया।

समाज शिरोमणी

राष्ट्रीय पुरस्कार

भारत के उपराष्ट्रपति

महामहिम डॉ0 शंकर दयाल शर्मा के कर कमलों से डॉ0 नारायणदत्त श्रीमाली को ज्योतिष एवं प्राचीन भारतीय विद्याओं के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वर्ष 1989 के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ॐ
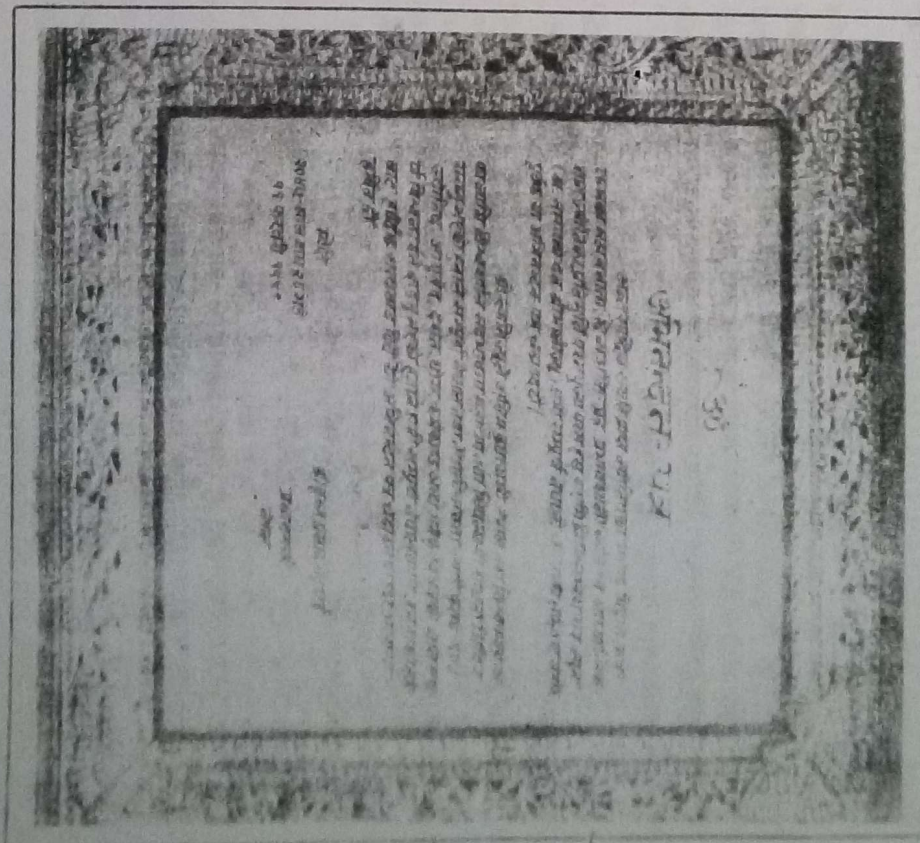
अभिनन्दन-पत्र

(2) सन् 1991 दिनांक 11 फरवरी नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री कृष्ण प्रसाद भट्राई द्वारा काठमाण्डों नेपाल में आयोजित एक समारोह में अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया इस अवसर पर अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए डॉ. कृष्ण प्रसाद भट्राई ने लिखा कि:-

अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त ज्योतिष्का प्रकाण्ड विद्वान मंत्र तंत्र का महाज्ञाता, दिव्यशक्ति-प्रद प्रभावशाली व्यक्तित्व आध्यात्मिक ज्ञान ज्योतिका प्रतिमुर्ति परमपुज्य परमहंस स्वामि निशिलेश्वरानन्द ज्युमा (डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली ज्यू) हामी सम्पूर्ण नेपाली जनता को तर्फबाटसभाले पूर्वक यो अभिनन्दन-पत्र चढाउदछौं।

श्री स्वामिज्यूले असिम कृपाराखी नेपाल तथा विश्वकल्याण का लागि विश्वशान्ति सद्भावना महायज्ञ तथा शिवलक्ष्मी साधना शिविर राख्नु भएको हुनाले सम्पूर्ण नेपाल तथा नेपाली जनता ज्यादै कृतज्ञ छन। ज्योतिष, आयुर्वेद, दर्शन, योग कर्मकाण्ड आदी अनेक विषयको ज्ञान सम्पूर्ण विश्वलाईने बाड्नु भएको हुनाले हामी सम्पूर्ण नेपालीवासी जनताको तर्कबाट हार्दिक धन्यवाद दिदैं यो अभिनन्दन-पत्र चढाउन पाउदा अत्यन्तहर्षित हौ।

नेपाल के तत्कालीन राजदूत द्वारा सम्मान:-

Ambassador of India
in Nepal Kathmandu.

September 22, 1974

Dr. Narayan Dutt Srimali, a renowned Indian Astrologer met me for the first time in Kathmandu and I have been deeply impressed by his vast knowldge of Jyotish Vidya in all fields of Astrology. His predictions about the future and his readings of the past based on scientific principles, are remarkably correct. Besides, Dr. Srimali is a man of extensive knowledge and deep culture and it is a joy to talk to him.

M. Rasgotra

(3) सन् 1977 पूज्यगुरुदेव का काशी विद्यापीठ जो कि भारत के मूर्धन्य विद्वानों की संस्कृति व्याकरण को साहित्य आचार्यों की सम्मानित संस्था है, में एक भव्य समारोह में पूज्य गुरुदेव को ''महामहोपाध्याय'' की उपाधि भेंट की और सभी विद्वानों ने समवेत स्वर में कहा कि यह काशी विद्यापीठ का सौभाग्य है कि आज डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जैसे युग पुरुष हमारे बीच में है और यह संस्था आपका स्वागत कर स्वयं अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर रही है।

भारती परिषद् प्रयाग:

धर्मस्य सम्यगम्युदयाय सद्विद्या प्रचाराय राष्ट्रस्य सर्वविधाया: श्रिय: सम्पधिकवर्द्धनाय च सततं प्रयत्नशीलं नीति प्रीति सुरीति गीति प्रतीति पूर्णप्रदायिनं वेदशास्त्रपुराणं श्रुति शुभधारिणं गुणकर शास्त्र सोरमपारिणं पाखण्डखण्डन हेतु वेदसुशास्त्रशस्त्रधारिणं सुधीपरम्

श्रीनारायणदत्त श्रीमाली
महाभागम्
महामहिमोपाध्याय:
इत्युपाध्यलङ्कारेणउलङ

(4) **गुजरात सम्मान 1985 :-** विश्व बन्धु डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली, समग्र भारत और इससे भी आगे बढकर जगत भर में आपने मंत्र तंत्र ज्योतिष शास्त्र और गायत्री महामंत्र की उपासना विधि पर जो नया प्रकाश दिया है उसकी वजह से समग्र शास्त्रों को जो नवजीवन मिला है इसके लिए समस्त मानवजाति आपकी ऋणी है।

भारती परिषद् - प्रयाग
श्री नारायणदत्त श्रीमाली
महामहिमोपाध्याय:
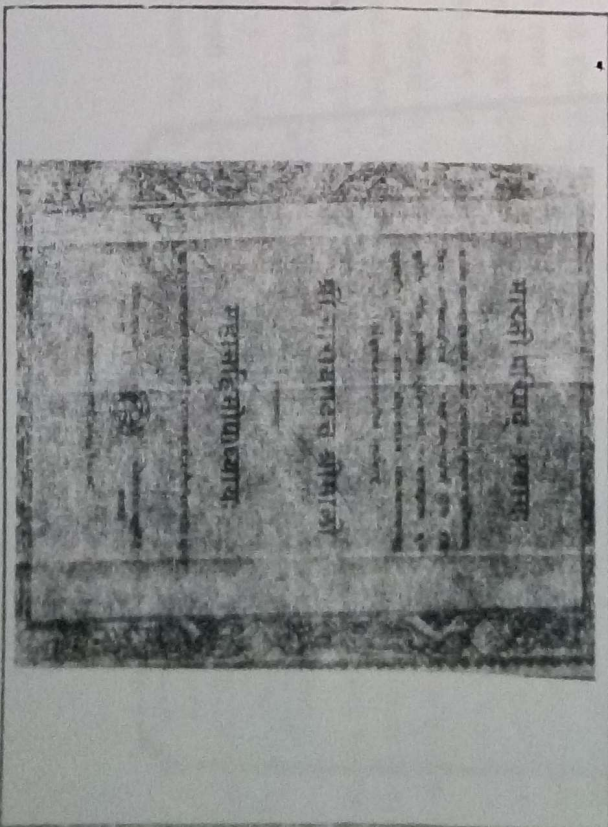
योगीराज:

आपने अपना गृहस्थाश्रम का भोग देकर मंत्र-तंत्र और ज्योतिष विद्या के पुनर्जीवन एवं उन्नति हेतु जो समय दिया है, जो कष्ट सहन किए है, ये सभी कष्ट और संघर्ष के परिपाक रूप आपको योगियों को भी दुर्लभ जैसे हिमालय स्थित सिद्धाश्रम में सिर्फ उन्तीस सालकी तरुणावस्था में जो प्रवेश मिला यह आपकी महान सिद्धि है। सिद्धाश्रम में से समाज के हितार्थ संसार में पुन:प्रवेश पानेवाले बहुत अल्प संख्या के योगियों में से आप एक है यह एक विशेष गौरवपद बात है।

हे सिद्धि पुंज

आपको उच्च कोटि की सिद्धियां और अगाध ज्ञान से आपने देश और विदेश के असंख्य लोगों का जो मार्गदर्शन दिया है और जो उपचार किये है इससे समस्त जगत आपका ऋणी है और अनन्तकाल के लिये ऋणी बना रहेगा।

हे मार्गदर्शक

आप अत्यंत व्यस्त होते हुए भी समय निकाल के वेदमाता गायत्री धाम राजकोट आयोजित श्री गायत्री महापुरश्चरण श्री पीठ स्थापित श्री बीज युक्त 105 कुंड़ी गायत्री महायज्ञ दि 7-8-9 मई 1982 के आयोजन में अतिथि विशेष पद पर पधारे है और ये तीनों दिन जो मार्गदर्शन हमें दिया है, आपने ज्ञान की गंगा का जो आस्वाद हमें कराया है और राजकोट को जो गौरव प्रदान किया है इसके लिये हम हर्ष अनुभव करते है और आपके आभारी हैं।

विभूतिवर्य

आप जैसी महान और विश्ववंद्य व्यक्ति का स्वागत करते हुए स्नेह से तर, हृदय में से निकली हुयी ये आभार और आदर के भार से लची हुई सम्मान की पुष्पवेली को आपके श्री चरणों में अर्पण करते हुए, आपका सम्मान करते है, और यह सम्मानपत्र अर्पण करने के साथ-साथ वेदमाता गायत्री से प्रार्थना करते हैं कि आपकी तंदुरस्ती और दीर्घायुष्य बनी रहे और आपके हाथों समग्र मानवजाति की सेवा होती रहे।

हम है आपके सहध्यी
वेदमाता गायत्रीधाम परिवार
और
गायत्री महायज्ञ आयोजन समिति
राजकोट दिनांक 9-5-82

गुजरात परिषद् के ज्योतिविंदों द्वारा सम्मान:-

All India Astrologers Federation

426, Spectrum Commercial Centre, Salapas Road, Ahmedabad-380 001

Certificate

We, the president and members of the Managing Committee of the All India Astrologers Federation, take pleasure in awarding the Honorary degree of

JYOTISH MAHAMAHO PADHYAYA

to Dr. Narayandutt Shrimali in consideration of his meritorious services in the field of predictive Astrology and Palmistry, on the occasion of the International Astrological Convention

The Certificate has been conferred on him at Ahmedabad on 11 th day of the month February in the year one thousand nine hundred Eighty five.

In the testimony thereof are set the seal of the said federation & the signature of the said president.

(5) दिल्ली में विश्व ज्योतिष सम्मेलन में सम्मान:-

दिल्ली में 1979 में विश्व ज्योतिष सम्मेलन में 60 से अधिक देशों के ज्योतिर्विद एकत्र हुए थे, जिसकी अध्यक्षता डॉ. श्रीमाली जी ने तीन दिन तक की थी।

सम्मेलन के अन्त में विश्व के ज्योतिषियों ने एक प्रस्ताव पास कर "विश्व के श्रेष्ठतम ज्योतिषि" की उपाधि से अलंकृत करते हुए डॉ. श्रीमाली का अद्वितीय सम्मान किया था।

सम्मानों की यह श्रंखला बहुत बड़ी है और अब तो पूज्य गुरुदेव यह कहते है कि मुझे इस क्रिया से दूर ही रखो। मैंने सिद्धाश्रम में कुछ संकल्प तय किये थे, उन संकल्पों की पूर्ति करना मेरा सबसे पहला कर्तव्य है। मेरे शिष्यों के चेहरों पर प्रसन्नता रहे, शिष्य अपने दु:ख दर्द साधना के बल पर हटा सके, सड़ी गली मान्यताओं को छोड़कर जीवन को नये ढंग से जीये और अपनी आंतरिक शक्तियों का विकास कर सकें, यही सबसे बड़ा सम्मान है। जब तक प्रत्येक शिष्य लक्ष्य निर्धारित नहीं करेगा और पूर्ण समर्पण एवं श्रद्धा के साथ संकल्पबद्ध होकर कार्य नहीं करेगा तब तक विजय कैसे संभव है, और इस जीवन का प्रत्येक क्षण

महत्वपूर्ण है. इसे हर रंग में मुस्कराते हुए जीवन्त रूप में जीना है। पूज्य गुरुदेव ने स्वयं अपने हाथों से संजोकर जो सम्मान पत्र इस विश्व को दिया है वह सबसे सार्थक सम्मान है जिसका नाम है ''मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान''

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

तन्त्र का तात्पर्य है, व्यवस्थित कार्य विधान, अर्थात किसी भी कार्य में पूर्णता किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है, यह प्रक्रिया तंत्र है, मंत्र वह कुंजी है, जिसके द्वारा सुप्त शक्तियों को जाग्रत किया जा सकता है और यंत्रशक्तियों का स्रोत बिन्दु है, अतः यह स्पष्ट है कि स्रोत, विधान एवं क्रिया तीनों का जब परस्पर समन्वय होता है तो शुद्ध सम्पूर्ण फल प्राप्त हो कर ही रहता है और यह पूर्ण विज्ञान है, इसमें संदेह का कोई स्थान नहीं।

इसलिये इस पत्रिका का नाम ''मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' रखा गया, जिसमें सभी प्रकार की विधियां पूर्ण रूप से आ सकें और इनका उद्देश्य व्यक्ति के जीवन में कमियों का निराकरण कर श्रेष्ठता पूर्णता प्राप्त कराना है, पत्रिका प्रकाशन के पिछले 11 वर्ष इस बात के साक्षी हैं कि जहां सिद्धान्तों की सत्यता है, उनका क्रिया रूप में प्रयोग है, वहां सफलता निश्चित रूप से प्राप्त हो कर ही रहती है।

समाज का केन्द्रीय बिन्दु साधारण गृहस्थ व्यक्ति है जो अपनी समस्याओं में उलझा अपनी आजीविका को चलाते हुए परिवार को पालता है, उसके जीवन में, दुःख, धूप-छांव की तरह चलते ही रहते हैं, पूज्य गुरुदेव कहते है कि इस केन्द्रीय बिन्दु का उत्थान होना आवश्यक है तभी समाज अपना सही मूल्य प्राप्त कर सकता है, उन्नति प्राप्त कर सकता है, पूज्य श्री कहते हैं कि साधना किसके लिए? क्या हर व्यक्ति पहाड़ों में श्मशानों में घर-परिवार छोड़ कर जा सकता है? यह उसके लिए संभव नहीं है उसके लिए तो अपने ही घर में रह कर कार्य करना आवश्यक है और यही सत्य महत्वपूर्ण बिन्दु है, अतः इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिये और जब इस उद्देश्य के साथ गुरु वाणी का संदेश लिए, उनका आशीर्वाद लिए पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तो यह जन-जन के पास पहुंची।

11 वर्ष का समय किसी संस्था के लिए बहुत लम्बा समय नहीं होता, फिर भी आज यह कहते हुए गर्व है कि यह जयघोष पत्रिका के माध्यम से हर गांव, हर कस्बे, हर शहर में गूंज रहा है, प्रत्येक शिष्य जिसने एक बार भी पूज्य गुरुदेव का सानिध्य पाया है, पत्रिका सदस्य बन कर शिष्यत्व ग्रहण किया है, उसने अपने जीवन

में एक नवीन प्रक्रिया प्रारम्भ की है उसे नई ज्ञान शक्ति, विचार शक्ति क्रिया शक्ति, आत्मशक्ति प्राप्त हुई है।

ज्ञान की तभी उपयोगिता है जब वह मनुष्य के काम आ सके, और मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान इसी उद्देश्य को लेकर प्रारम्भ हुआ कि हमारे वेदों में, शास्त्रों में ज्ञान ऋषि-मुनियों द्वारा रचित ग्रन्थ मनुष्य के किस प्रकार काम आ सकें, वह ज्ञान केवल कुछ पंडितों, महन्तों, सन्यासियों के पास कैद हो कर न रह जाय।

हमें आज यह गर्व है कि पत्रिका का प्रत्येक सदस्य जानता है, समझता है कि पूजा साधना की क्या प्रक्रिया है, किस समय कौन सी साधना की जाय, मंत्र की क्या उपयोगिता है, इनमें से प्रत्येक को अनुभूति अवश्य हुई है, यह अनुभूति उन्हें अपने जीवन के बारे में और भी अधिक चैतन्य करती है।

ज्ञान गंगा-निरन्तर प्रवाह

इस पत्रिका का प्रकाशन नियमित मासिक रूप से किया जाता है, और इसे पत्रिका सदस्यों को सीधे उनके घर के पते पर भेजा जाता है, इसके साथ घर में आगमन होता है एक श्रेष्ठ सुगन्धित, आध्यात्मिक वातावरण का, जिसमें सब प्रकार का ज्ञान विज्ञान है जो कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक है, इसमें समाहित रहता है, साधनात्मक साहित्य, योग, ज्ञान-विज्ञान, जीवन, उपदेश, जिससे पूरे घर में एक प्रकाश फैल जाता है, जीवन नये रूप में जीने का जोश उत्पन्न होता है।

मोती-मोती माला पिरोई

पत्रिका का प्रत्येक अंक क्रियात्मक ज्ञान का स्वरूप है, इसे पढ़कर कोई भी विचारशील व्यक्ति नकार नहीं सकता, इसका एक-एक मनका मोती है, जिस प्रकार माला का एक एक मनका महत्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार पत्रिका का प्रत्येक अंक महत्वपूर्ण है, यह जीवन को श्रेष्ठतम बनाने के लिए क्रियात्मक ज्ञान प्रस्तुत करता है, ये अंक वर्तमान में तो आपके लिए उपयोगी है ही, आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने बच्चों के लिए भी आप ऐसी ज्ञान धरोहर संग्रह कर रहे हैं, जिसे प्राप्त कर वे अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करेंगे।

''मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' पत्रिका ऐसा ध्वज है, प्रकाश स्तम्भ है, जिसका ज्ञान प्राप्त कर साधक अपने जीवन की बाधाएं परेशानियां अपने आप सुलझा सकता है, कठिन से कठिन विषय को सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे सामान्य साधक भी पूर्णतः समझ कर अपने जीवन में इसे उपयोग में ला सकता है।

के संबंध में जो योजनाएं बनाई गई है, वे जल्दी-जल्दी पूरी हो,

आजीवन सदस्यता शुल्क ~~2400/-~~ 6666/- रूपये है, जो कि धरोहर धनराशि है, और यह कार्यालय में आपके नाम से जमा रहती है।

आजीवन सदस्यों को पूज्य गुरूदेव की ओर से विशेष उपहार ''पारद शिवलिंग'' दिया जाता है जिससे वे अपने पूजा स्थान में स्थायी रूप से स्थापित कर सकते है।

सदस्यता संबंधी तथा पत्रिका के अन्य विभागों के संबंध में पूर्ण जानकारी हेतु पत्रिका कार्यालय में पत्र लिखकर जानकारी प्राप्त कर सकते है।

कार्यालय पता है-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग
हाई कोर्ट कालोनी
जोधपुर (राज0)
पिन-342001
टेलीफोन-0291-32209

''मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' यदि आपके हाथ में है तो यह निश्चित समझे कि पूरे विश्व का आध्यात्मिक ज्ञान आपके पास है।

पूज्य गुरूदेव का कृतित्व

पूज्य गुरूदेव जब अपने संन्यास जीवन से पुनः अपने सांसारिक जीवन में आये तो उन्होंने यह अनुभव किया कि हमारे प्राचीन साहित्य के संबंध में तंत्र मंत्र ज्योतिष आयुर्वेद इत्यादि के संबंध में श्रेष्ठ ग्रन्थों का अभाव ही है, कुछ ग्रन्थ जो वेदों से सीधे नकलकर लिखे गये है तो उनमें उचित व्याख्याता अभाव है और एकदम संस्कृत भाषा में है, और वर्तमान समय में संस्कृत भाषा का सामान्य व्यक्ति बहुत कम जानकार है, इस कारण लोगों की इस महान प्राचीन ज्ञान के प्रति अरुचि सी हो गई।

उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि इस महा विद्या को पुनः जीवित करना है तो इसे सामान्य जन की भाषा में लिखना पड़ेगा, जिससे वह स्वयं समझ सके और उसमें एक रूचि जाग्रत हो सके। जब तक व्यक्ति स्वयं पढ़कर अपनी इच्छा से किसी भी कार्य क्षेत्र में प्रवेश नहीं करता, तब तक उसे सफलता कैसे मिल सकती है, और इस प्रकार उन्होंने साररूप ग्रन्थों को लिखना प्रारम्भ किया, जो आज जन-जन में विख्यात है।

पूज्यगुरूदेव द्वारा रचित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों के नाम इस प्रकार है-

(1) मंत्र रहस्य (2) प्रेक्टिकल हिप्नोटिज्म (3) बृहत हस्त रेखा शास्त्र (4) रहस्यमय अज्ञात तंत्रों की खोज में (5) गोपनीय दुर्लभ मंत्रों के रहस्य (6) तांत्रिक सिद्धियां (7) लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग (8) लक्ष्मी साधना (9) भारतीय ज्योतिष (10) ज्योतिष योग (11) कुण्डली दर्पण (12) ज्योषित रहस्य (13) हस्त रेखा रहस्य (14) श्मशान भैरवी (15) हिमालय का सिद्ध योगी (160 फलित ज्योतिष (17) भौतिक साधना और सिद्धियां (18) स्वर्ण तंत्रम् (19) निखिलेश्वरानंद स्तवन (24) अमर भविष्य वाणियां (25) तंत्र साधनाएं (26) हस्ताक्षर विज्ञान (27) अंक दीपिका (28) स्वप्न ज्योतिष (29) हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियां ।

इन कृतियों का कई भारतीय भाषाओं में तथा विदेशों में अनुवाद हो चुका है। इन पुस्तकों के संबंध में जितना कहा जाय उतना ही कम है। सार रूप यह हैं कि ये सभी पुस्तकें भारतीय विद्याओं का सामान्य जन के लिये सार है कई ज्योतिषी तो कहते है कि हम केवल डॉ0 श्रीमाली जी की पुस्तकें पढ़कर ही ज्योतिषी बन गये है, वे तो हमारे गुरू है, जिनकी कृपा से ज्योतिष शास्त्रों को नई दिशा प्राप्त हुई है।

पूज्य गुरूदेव के प्रवचन

जब जब महा पुरुष प्रवचन देते है तो भक्तजन उनकी आवाज टेपरिकार्ड में कैद कर बार-बार सुनते है, और जिस प्रकार मधुर संगीत को बार बार सुनने पर भी प्यास नहीं बुझती उसी प्रकार पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों की प्यास भी कुछ ऐसी ही है,

विचारोत्तेजक ज्ञान से भरपूर एक-एक रहस्य को हटाते हुए साधना के प्रति फैली भ्रांतियों का निवारण करने वाली ये अद्वितीय कैसेटें, जिसमें पूज्य गुरूदेव को वाणी का एक एक शब्द सीधा ह्रदय में उतरता है।

पूज्य गुरूदेव कहते है कि ''एक एक शब्द को ध्यान से सुनो, अपनी चित्त वृत्तियों को नियंत्रण में कर जिस प्रकार जप करते हो, अनुष्ठान करते हो, उसी प्रकार अपने पूजा स्थान में शान्त मुद्रा में बैठकर सुनो, प्राणों में स्पन्दन होगा, मस्तिष्क में झनझनाहट उत्पन्न होगी, फिर एक द्वार खुल जायेगा, कुछ ऐसा दिखने लगेगा, जिसके लिए तुम भटक रहे थे, तुम्हारी समस्याएं तुम्हें सरल दिखने लगेगी।

आडियो कैसेट

1. स्वामी सच्चिदानंद	2. पूज्य सच्चिदानन्द स्तवन
3. सिद्धाश्रम	4. सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
5. मैं सिद्धाश्रम में सशरीर विचरण कर सकता हूँ।	6. गुरू गति
7. गुरू हमारो गोत्र है	8. गुरू गति पार लगावे
9. गुरू मोरो जीवन प्रेम अधार	10. गुरू पादुका पूजन
11. दुर्लभोपनिषद	12. शिष्योपनिषद
13. प्रेम धार तलवार की	14. प्रेम न हाट बिकाय
15. प्रेम पंथ अति कठिन है	16. अकथ कहानी प्रीत की
17. पिव बिन बुझे न प्यास	18. सूली ऊपर सेज पिया की
19. घूंघट के पट खोल री	20. बिरहिन दियरा जोवे बाट
21. काहि विधि करूं उपासना	22. मैं खो गया तुम भी खो जाओ
23. मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं	24. मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
25. हिप्नोटिज्म रहस्य	26. परा विज्ञान
27. पारद विज्ञान	28. पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
29. पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग	30. लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (तीन भाग)
31. लक्ष्मी मेरी चेरी	32. शिव सूत्र
33. शिव सूत्र	34. पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (3 भाग)
35. कुण्डलिनी योग	36. कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
37. ध्यान योग	38. क्रियायोग शिविर (6 भाग)
39. साधना सूत्र	40. साधना, सिद्धि एवं सफलता
41. ध्यान, धारणा और समाधि	42. समाधि के सात द्वार
43. मृत्योर्मा अमृतं गमय	44. समाधि रहस्य
45. अणिमा सिद्धि	46. लघिमा सिद्धि
47. विशेष लामा मंत्र	48. ऊँ मणि पद्मे हुं
49. चामुण्डा दीक्षा	50. सतोपंथी दीक्षा
51. तंत्र रहस्य	52. मां भगवती जगदम्बे शत्-शत् वन्दन
53. महासरस्वती स्वरूप साधना	54. महालक्ष्मी स्वरूप साधना
55. महाकाली स्वरूप साधना	56. महालक्ष्मी साधना
57. विशेष दीपावली साधना	58. कुबेरपति शिवशक्ति साधना

59. अक्षय पात्र साधना
60. कायाकल्प साधना
61. षोडश अप्सरा साधना
62. स्वर्ण देहा अप्सरा साधना (2 भाग)
63. महाकाली शिविर (6 भाग)
64. ऋणहर्ता लक्ष्मी गणपति प्रयोग
65. निखिलेश्वर महोत्सव (6 भाग)
66. अमृत महोत्सव 1989 (3 भाग)
67. 108 कुंडीय हनुमान लक्ष्मी महायज्ञ
68. 108 कुंडीय गणेश गायत्री महायज्ञ शिविर (3 भाग)
69. पद्म कुंडीय एवं शिविर (3 भाग)
70. महाकुम्भ इलाहाबाद 89 (4 भाग)
71. शतअष्टोतरी शक्तिपीठ साधना
72. गुरू पूर्णिमा ओंकारेश्वर (4 भाग)
73. जन्म दिन 1990 (पांच भाग)
74. चैत्र नवरात्रि 1990 (8 भाग)
75. नवरात्रि अहोभाग महोत्सव (9भाग)
76. विश्व सद्भावना यज्ञ एवं शिविर
77. गुरू पर्व 1991 (4 भाग)
78. आश्विन नवरात्रि
79. संध्या आरती
80. संगीत बहार (1 से 6 तक)
81. दुर्लभ गुरू भजन (2 से 16 तक)

वीडियो कैसेट

1. सिद्धाश्रम
2. कुण्डलिनी
3. स्वर्णदेहा
4. लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग
5. पाशुपतास्त्रेय
6. शिव पूजन
7. महाकुम्भ 89 (इलाहाबाद)
8. अक्षय पात्र साधना
9. मुजफ्फनगर शिविर
10. मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं
11. अजानी पगडंडियों पर पूज्य गुरूदेव के साथ
12. कुण्डलिनी जागरण की झलक
13. तंत्र के गोपनीय रहस्य
14. हिप्नोटिज्म रहस्य
15. साधना, सिद्धि एवं सफलता
16. मन मयूर नाचे
17. विश्व शांति यज्ञ एवं शिविर
18. लक्ष्मी मेरी चेरी
19. पिय बिन बैरण काली रात
20. मां भगवती जगदम्बे शत् शत्
21. चैत्र नवरात्रि 1990 (2 भाग)
22. अहोभाव महोत्सव नवरात्रि 1990
23. गुरू पर्व ओंकारेश्वर 1990
24. पद्म कुण्डी यज्ञ एवं शिविर
25. निखिलेश्वर महोत्सव 1990
26. जीवन पग-पग साधना है
27. आध्यात्मिक प्रवचन
28. गुरू पूर्णिमा शिविर (बैंगलोर) 1991
29. आश्विन नवरात्रि 1991

प्रत्येक ऑडियो कैसेट की न्यौछवर 30.00 रू. तथा वीडियो कैसेट 200.00 रू. है, धनराशि अग्रिम आनी आवश्यक है।

सम्पर्क:- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ0 श्रीमाली मार्ग,
हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राज0)

दैनिक दिनचर्या

आज भी पूज्य गुरूदेव के व्यक्तित्व में वही तीव्रता है, वही हास्य है, मुस्कराहट है, साधना की तीव्रता है जो वर्षों-वर्षों पहले थी, अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यक्रम में कोई बदलाव नहीं आया है, आज भी उनका अपने सिद्धाश्रम के सहयोगियों के साथ उतना ही सम्पर्क है, और हर कुंभ के अवसर पर चाहे वह प्रयाग में हो, हरिद्वार में हो, अथवा नासिक में, कुंभ के अवसर पर पूज्य गुरूदेव के दादा गुरू श्री सच्चिदानंद जी महाराज अपने सिद्धाश्रम के शिष्यों के साथ अवश्य आते है, और पूज्य गुरूदेव के शिष्यों को दर्शन देते है।

आज भी पूज्य गुरूदेव प्रात: 3 बजे उठकर स्नान कर अपनी पूजा में बैठ जाते है, और यह कार्यक्रम प्रात: 8 बजे चलता रहता है. उस समय उन्हें उनके ध्यान से कोई भी विचलित नहीं कर सकता। उनका कहना है कि निरन्तर साधना की तपस्या से ही शुद्धता कायम रह सकती है, शक्ति का प्रवाह निरन्तर बना रहता है, और पूज्य गुरूदेव कहते है कि जो भी मैं अपने शिष्यों को कहता हूं जब तक मैं स्वयं देख परख न लूं, उसे अपने व्यक्तिगत अनुभव द्वारा सिद्ध न कर दूं, तब तक केवल पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर उपदेश देना उचित नहीं है। मैं, अपने शिष्यों को केवल वही कहता हूं जो मैंने स्वयं अनुभव किया है, सिद्ध किया है।

दिन-प्रतिदिन पूज्य गुरूदेव से मिलने जो भी साधक आते है उन्हें पूज्य श्री 9 बजे से 12 बजे तक दर्शन देते है, उनकी समस्याओं को सुनते है उनके मस्तिष्क पर हाथ रखते है, उनकी पीड़ाओं को दूर करने का प्रयास करते है, उनको उचित मार्ग दिखलाते है, हर एक से मिलना, उसकी समस्या सुनकर उसका समाधान करना कोई सरल काम नहीं है। यह तो योग विद्या से तपे हुए पूज्य गुरूदेव जैसे महान् व्यक्तित्व से ही संभव है.

सांयकाल 4 से 5 बजे के बीच पूज्य गुरूदेव आश्रम का एक भ्रमण अवश्य करते है, आश्रम में प्रवेश के नियम बड़े ही कठोर है और इन नियमों में गुरूदेव शिष्य के भीतर वह भक्ति श्रद्धा और समर्पण का तार देखते है, कई बार भिन्न-भिन्न रूपों में शिष्यों को डांटकर उपेक्षा कर परीक्षा लेते है, और वो अपने शिष्यों को प्यार भी उतना ही अधिक करते है, उनका कहना है कि मैं जब इस धरती से पुनः सिद्धाश्रम जाऊंगा तो छोड़कर क्या जाऊंगा, केवल अपनी विद्या और ज्ञान और इन विद्याओं और ज्ञान उन शिष्यों को पारंगत करके ही तो भारतीय विद्याओं की ज्ञान गंगा का प्रवाह कायम रख सकता हूं, इसलिये मुझे सबसे अधिक मेरे शिष्य ही प्रिय है।

जन जन के गुरूदेव–आत्म विचार

पूज्य गुरूदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली भारत वर्ष में और विदेशों में हजारों लाखों लोगों के संपर्क में आये है, और जिन-जिन के भी संपर्क में आये उनके पास गुरूदेव की स्मृतियां संयोजित है। आगे इन्हीं में से कुछ अनुभवः-

गुरूदेव एक अद्वितीय ज्योतिषी

प्रभुदयाल चौरसिया- भविष्यवक्ता कानपुर

सन् 1979 का समय था, दिल्ली में विश्व ज्योतिष सम्मेलन संपन्न हो रहा था, जिसमें देश के और विदेशों के सैकड़ों ज्योतिषी एवं भविष्यवक्ता एकत्र हुए थे, इस सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली कर रहे थे।

उन्हीं दिनों शीला नैयर का नाम काफी उछल रहा था, और ऐसा लग रहा था कि आजकल में ही ये केन्द्रीय मंत्रीमंडल में स्थान प्राप्त कर लेगी, उन्होंने इस सम्मेलन में शिरकत भी की थी, उन्होंने एक दिन पूछा कि मुझे मंत्री मंडल में कौन सा विभाग मिलेगा, श्रीमाली जी ने एक क्षण उनकी हाथ की रेखाओं की ओर ध्यान दिया और कहा- तुम पूरे जीवन में मंत्रिमंडल में स्थान पा ही नहीं सकोगी यह लाइन आश्चर्यजनक थी, क्योंकि हालात सर्वथा विपरीत थे।

पर यही हुआ, उन्हें किसी विशेष कारण से इन्दिरा गांधी ने मंत्रिमंडल में नहीं लिया और आज तक वे इस पद से वंचित ही रही, आज भी वे जब भी मिलती हैं तो विनोद के क्षणों में कह बैठती हैं, कि आपने यह कैसी भविष्यवाणी कर दी थी?

सिद्धाश्रम और पूज्य गुरुदेव- कपित नैयर-दिल्ली

यह घटना 1979 के विश्व ज्योतिष सम्मेलन के दो तीन दिन पहले की है, सम्मेलन के पहले मैनें पूरे हिन्दुस्तान का प्रेस सम्मेलन किया था, जिसमें श्रीमाली जी और अन्य कुछ ज्योतिषी पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे।

पत्र परिषद् खचाखच भरी हुई थी, भारत के ही नहीं अपितु अन्य देशों के पत्रकार भी इस सम्मेलन में शरीक हुए थे, चर्चा ज्योतिष से हटकर सिद्धाश्रम पर अटक गई, एक महिला पत्रकार ने कहा कि मैं कई वर्षों से गठिया रोग से पीड़ित हूं, और इसका इलाज है ही नहीं। क्या सिद्धाश्रम के पास इसकी कोई औषधि है?

उस खचाखच भरे हाल में सैकड़ों पत्रकारों के बीच श्रीमाली जी ने हवा में से एक तरल पदार्थ से भरी हुई शीशी प्राप्त की और उस महिला पत्रकार को देते हुए कहा कि यह औषधि सिद्धाश्रम से अभी-अभी प्राप्त की है, निश्चित ही इससे तुम्हारा गठिया रोग जड़-मूल से नष्ट हो जायेगा।

बाद में वह महिला पत्रकार मुझे मिली तो चहकते हुए बोली "वास्तव में ही मेरा गठिया रोग जड़ मूल से समाप्त हो गया है, मैनें अभी भी उस शीशी में उस दवा की दो चार बूंदें बचाकर रखी हैं, पर श्रीमाली जी है वास्तव में ही अद्वितीय पुरुष।

इस घटना का भारत की विख्यात लेखिका अमृता प्रीतम ने भी अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है।

विनोदी व्यक्तित्व के धनीः- डॉ. श्रीमाली - के. एन. शर्मा -भोपाल

भोपाल में अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन हो रहा था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. श्रीमाली कर रहे थे, मंच पर श्रीमाली जी के साथ-साथ अन्य ज्योतिषी, मध्य प्रदेश के मंत्री कैलाश जोशी, ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिन्धिया भी विद्यमान थीं।

हॉल खचाखच भरा हुआ था, तिल रखने को भी जगह नहीं थी, हॉल के बाहर भी हजारों श्रोता उपस्थित थे, उनमें से एक गुट इस बात के लिए सक्रिय था कि किसी भी प्रकार इस सम्मेलन में हो-हल्ला करना है, और इस आयोजन को सफल नहीं होने देना है।

जब आयोजकों ने पुष्प मालाएं सभी मंत्रियों, अध्यक्ष और अन्य ज्योतिषियों को पहनाई तो ज्योतिषियों ने मंच के कोने पर जहां अपने जूते खोले थे, उस पर

वे पहनी हुई मालाएं रख दी।

उस गुट को तो कोई अवसर चाहिये था, उन्होंने हो हल्ला मचाना शुरू कर दिया कि यह मध्य प्रदेश का और भोपाल का अपमान है, हमने जो मालाएं उनके गलों में पहनाई है, उन्होंने उसका तिरस्कार कर जूतों पर डाल दी है।

वातावरण काफी गर्म हो गया, आयोजकों को कुछ सूझ नहीं रहा था, लोग विरोध में खड़े हो गये, तभी श्रीमाली जी मंच पर खड़े हुए और माइक हाथ में ले कर बोले- ''यह हमारी भारतीय परम्परा है और भगवान राम के वनवास जाने के बाद भरत ने राम की पादुकाओं का चौदह साल तक पूजन किया, उन्हें सम्मान दिया और उन पर फूल मालाएं चढ़ाई, यदि वही परम्परा आज भोपाल में भी हो रही है, तो यह भोपाल वासियों की नम्रता और परम्परा की एक कड़ी को साकार करना है।''

और इस तर्क के आगे कोई उत्तर था ही नहीं, पूरे हाल में शांति हो गई और आगे तीन-चार घंटों तक वह सम्मेलन पूरी शांति और व्यवस्था के साथ साथ संपन्न हुआ।

यज्ञ के पुरोधाः पूज्यगुरुदेव- गोवर्धन पुरोहित - मैसूर

यह सन् 1971 की बात है, मैंसूर में लक्ष्य चंडी यज्ञ संपन्न हो रहा था, जिसमें 1001 पंडितों ने भाग लिया था, इनमें उत्तर भारत के पंडितों के साथ-साथ दक्षिण भारतीय विद्वान भी थे, इस अद्वितीय महायज्ञ का संचालन और अध्यक्षता पूज्य गुरुदेव कर रहे थे, तथा मैसूर के राजघराने की तरफ से यह यज्ञ हो रहा था।

यज्ञ के तीसरे दिन जब नवग्रह स्थापन हो रहे थे तो मैसूर के प्रधान कामदार चामुण्डीयार ने सभी पंडितों के सामने कौतुहल से पूछा कि इस बात की क्या गारण्टी या क्या प्रमाण है कि आपने जो मंत्र पढ़े, उससे नवग्रह आ गये हैं, या इस यज्ञ में बैठ गये है? क्या सूर्य भी ग्रह के रूप में इस स्थान पर विराजमान है, जहां आपने उनसे संबंधित चावलों की ढ़ेरी बनाई है?

प्रश्न बड़ा ही तर्कयुक्त, सटीक, तीव्र और पैना था, पर साथ ही साथ चुनौती भरा भी था। पूज्यगुरुदेव ने एक क्षण चामुण्डीयार की ओर देखा और फिर कहा कि यदि आपको विश्वास न हो तो जहां पर सूर्य को ''आकृष्णेति'' मंत्र से स्थापित किया है, वहां आप अब उंगलियों को स्पर्श करके देखें.

श्री चामुण्डीयार ने उस स्थान को अपनी चारों उंगलियों से स्पर्श किया तो एक

दम हड़बड़ा कर हाथ खींच लिया। ऐसे लगा कि जैसे उनकी उंगलियां जल गई हो, यही नहीं अपितु उनकी उंगलियो के पोरों पर आग से झुलस जाने की वजह से फफोले पड़ गये थे।

श्रीमाली जी ने उत्तर दिया कि यदि सूर्य जैसे प्रखर अग्नि तत्व युक्त विद्यमान है तो फफोले पड़ने स्वाभाविक है और वास्तव में ही इस घटना से यह स्पष्ट हो गया कि गुरुदेव सही अर्थों में मंत्र दृष्टा है, और मंत्रों के माध्यम से देवताओं का आव्हान एवं स्थापन करने की क्षमता गुरुदेव में है.

स्पर्श से रोग का निवारण–हरीशंकर वाजपेयी, लखनऊ

लखनऊ में मैं सचिवालय में अधिकारी हूं,मेरा बड़ा पुत्र कुछ ऐसी बीमारी से पीडित था, जिसके बारे में न तो डाक्टरों की एक राय थी और न डाक्टर उस रोग का मूल कारण समझ रहे थे, बीमारी से संबंधित या अन्य जितने भी प्रकार के मेडिकल टेस्ट होते हैं, वे सब मैंने संपन्न करवाये, परन्तु रिजल्ट कुछ भी नहीं निकला।

उलटा हुआ यह कि मेरे बड़े और इकलौते पुत्र की हालत दिनों दिन खराब होती चली गई, मैंने पी. जी. एन. हॉस्पिटल चण्डीगढ़ तथा जसलोक अस्पताल बम्बई में भी दिखाया, जब कुछ रिजल्ट नहीं निकला तो अपने कुछ मित्रों के कहने से मैं लड़के को अमेरिका ले गया, वहां पर मैं लगभग तीस दिन रहा और जितने भी प्रकार के संभावित टेस्ट और चैकिंग थी, उसे संपन्न करवाया पर इसका भी कोई परिणाम नहीं निकला, हार-थक मैं अपने लड़के को लेकर घर लौट आया।

मैं उसकी मृत्यु को निकट आते अनुभव कर रहा था, मैंने सारी उम्मीदें छोड़ दी थी, तभी किसी ने डॉ. श्रीमाली का नाम सुझाया, वे उन दिनों किसी काम से लखनऊ आये हुए थे और हिमलाज होटल में ठहरे हुए थे। मित्रों और सहयोगियों के कहने से मैंने होटल में ले जाकर अपने पुत्र को दिखाया, पुत्र तो लगभग लाश की तरह हो गया था।

मैं और मेरे सभी मित्र साक्षी हैं, उन्होंने दो-चार मिनिट आखें बंद कर ध्यान किया, और फिर अपने अंगूठे का स्पर्श उसके ललाट पर कुछ सैकण्ड करने के बाद कहा इसे घर ले जाओ, अब ठीक हो जायेगा।

मैं पूरी तरह से अविश्वास से पूरित था, दो चार सेकण्ड के स्पर्श से क्या हो

सकता है, जबकि अमेरिका के डाक्टर भी रोग का मूल कारण नहीं ढूंढ पाये या इलाज नहीं कर सके पर मैं हार थक कर लड़के को घर ले आया।

पर आश्चर्य, उसी क्षण से लड़के का स्वास्थ्य सुधरने लगा और दिनों दिन सुधरता गया। अगले तीन महीनों में तो वह बिल्कुल स्वस्थ हो गया, उसमें नख भर भी रोग नहीं रहा। आज मेरा पुत्र भारत सरकार दिल्ली में गृह विभाग में सचिव पद पर विद्यमान है, और यदि वह स्वस्थ जीवित है तो यह पूज्य श्रीमाली जी की ही कृपा है।

सम्मोहन के श्रेष्ठ अध्येता : डॉ. श्रीमाली-पुष्पा जैन, बम्बई

भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति सिंगानिया परिवार की मैं बहू हूं, मेरा जन्म बम्बई में हुआ है।

जब मैं बड़ी हुई तो मेरा प्रेम सिंगानिया परिवार के मंझले पुत्र से हो गया और मैं उस दिन के स्वप्न देखने लगी जब मैं उस परिवार में बहू बन कर आ सकूं, पर ऐसा संभव नहीं हो रहा था, क्योंकि न तो उस परिवार को यह स्वीकार था और न मैं उस व्यक्तित्व को अपनी और आकर्षित कर पा रही थी, जिससे मैं प्रेम कर रही थी।

शुरू-शुरू में तो उन्होंने मेरे प्रति प्रेम दिखाया, परन्तु बाद में किसी कारण से उपेक्षा करने लगे, और एक दिन तो ऐसा भी आया कि वे महीने भर से मुझे नहीं मिले। मैं समझ गई कि मैं उनके मन से उतर गई हूं, पर मेरे पास कोई चारा नहीं था, कोई रास्ता नहीं था, कि मैं अपने स्वप्न को साकार कर सकूं।

उन्हीं दिनों मैने सुना कि डॉ. श्रीमाली जुहू के हरे कृष्ण मंदिर में ठहरे हुए हैं, और यदि वे चाहें तो मेरी सहायता कर सकते हैं। मुझे इस बात का भरोसा तो था नहीं, सोच रही थी कि अब कुछ नहीं हो सकता, पर फिर भी डूबते हुए को तिनके का सहारा भी काफी मददगार प्रतीत होता है, और मैं एक दिन बिना किसी को कहे इस्कान में पहुंच गई ।

लगभग दो घंटे प्रतीक्षा के बाद श्रीमाली जी मुझे मिले, मेरी बात ध्यान से सुनी, और उन्होंने पूछा भी- क्या मैं वास्तव में ही उनसे गंभीरता से प्रेम कर रही हूं, और क्या मैं इनसे शादी करना चाहती हूं, साथ ही साथ उन्होंने पूछ लिया कि क्या शादी के बाद भी पूरी तल्लीनता के साथ बहू बनकर रह सकोगी?

मेरी आंखों मे आंसू आ गये, मैंने कहा मैं वास्तव में ही आदर्श पत्नी बन कर दिखा देना चाहती हूं, पर अब कुछ नहीं हो सकता, इनके घर वाले तो इस शादी के खिलाफ थे ही, उनका भी मन पूरी तरह से मुझ से हट गया है, और दुख से मैं सुबकियां भरने लगी, न मालूम क्यों उनके सामने लगातार अश्रु प्रवाह हो रहा था।

वे दो क्षण मुझे शान्त करते रहे, फिर उन्होंने अपने पास से पारे से बनी हुई अंगूठी निकाल कर मुझे दी और कहा कि इसे पहिन लो, तुम्हारा काम हो जायेगा।

मैं समझ गई कि ये शब्द केवल मुझे सांत्वना देने के लिए है। इस पारद की अंगूठी से कुछ होना-हवाना नहीं है, पर फिर भी मैने वह अंगूठी अपने दाहिने हाथ की उंगली में पहिन ली।

संयोगवश एक दिन जब मैं सुबह जूहू पर घूम रही थी, तो वे भी जूह बीच पर आते हुए दिखाई दिये, एक सेकेण्ड के लिए बातचीत हुई, और उनकी दृष्टि मेरी पहिनी हुई उस अंगूठी पर पड़ी।

पता नहीं उनके मानस में क्या हलचल हुई, जिन आंखों में उपेक्षा के भाव थे उन आंखों में मैंने प्रेम और मधुरता तैरती हुई देखी, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, और हम जूह बीच पर लगभग आधे घंटे साथ-साथ बैठे बातचीत करते रहे, एक प्रकार से पूरा वातावरण ही पलट गया था, ऐसा लग रहा था कि जैसे वे पूरी तरह से सम्मोहित हो गये हों।

और इसके एक महीने के बाद ही हम दोनों प्रणय सूत्र में बंध गये, आज मैं उस घराने की बहू हूं और अत्यधिक सुखी एवं आनन्द युक्त हूं। आज भी वह वशीकरणयुक्त मुद्रिका मैने उंगुली में पहनी हुई है।

आयुर्वेद के अद्वितीय ज्ञाता : डॉ. श्रीमाली-कृष्णकान्त चतुर्वेदी, इन्दौर

मैं आयुर्वेद का ज्ञाता हूं, और पिछली कई पीढ़ियों से हमारे घर आयुर्वेद की परम्परा चली आ रही है, मेरे पिताजी श्री मधुसूदन जी अपने आप में श्रेष्ठतम वैद्य थे, जिनकी चर्चा पूरे मध्य प्रदेश में फैली हुई थी, मैंने भी यह ज्ञान अपने पिता से ही प्राप्त किया।

पर पारद विज्ञान का कोई सिरा मेरी समझ में नहीं आ रहा था, पारद से स्वर्ण निर्माण किया जा सकता है, अथवा पारद के माध्यम से संसार के किसी भी रोग को समाप्त किया जा सकता है, विशेष कर कैंसर, दमा, ब्लड प्रेशर आदि में तो पारद का सेवन अपने आप में अद्वितीय माना गया है, ऐसा मैंने वैद्यक ग्रन्थों में पढ़ा था यही नहीं अपितु मैंने यह भी पढ़ा था कि यदि पारद को विशेष प्रकार से निर्मित

किया जाय, तो उसके माध्यम से वृद्धावस्था को भी यौवनावस्था में बदला जा सकता है, नपुंसकता मिटाई जा सकती है, और पूरी तरह से कायाकल्प किया जा सकता है।

मैं पूरे भारतवर्ष में भटका परन्तु मुझे कोई ऐसा विद्वान नहीं मिला जो इस संबंध में पूरा ज्ञान रखता हो।

सन् 1982 में डॉ. श्रीमाली इन्दौर आये हुए थे, और इन्दौर के प्रसिद्ध उद्योगपति टीबरीवाल के यहां ठहरे हुए थे, मेरे पिताजी किसी विशेष बीमारी से समय से पहले ही वृद्ध और कमजोर से हो गये थे, और दाहिने भाग पर हलका सा लकवे का असर भी आ गया था।

मैं अपने पिताजी को लेकर उनकी सेवा में पहुंचा वे पूजा पाठ करके उठे ही थे, उन्होंने भी मेरे पिताजी का नाम सुन रखा था, वे बड़े प्रेम से मेरे पिताजी से मिले।

जब उन्होंने यह जाना कि पिताजी किसी रहस्यमय बीमारी से परेशान हैं, अत्यधिक कमजोर हो गये हैं, और दाहिने भाग पर फालिज भी गिर गया है, तो उन्होंने कहा कि मैं लगभग दस पन्द्रह दिन इन्दौर में ही हूं, और मैं आपके पिताजी को पूर्ण स्वस्थ एवं उनका कायाकल्प कर दूंगा, आप कल अपने पिताजी को लेकर यहीं आ जाय।

उन्होंने पारद भस्म और कुछ आयुर्वेद से संबंधित औषधियों को मिलाकर एक रसायन तैयार किया, तथा शहद के साथ मेरे पिताजी को देने लगे, उन्हेंने मेरे पिताजी को श्री टिबरीवाल जी के मकान में ही एक कमरे में अपनी देखरेख में रख दिया।

आज दुनियां का कोई भी आदमी मेरे पिताजी को देख सकता है, उनके बाल वापिस काले हो गये हैं, शरीर में पौरुषता और जवानी आ गई है, वे अत्यधिक सुन्दर और आकर्षक प्रतीत होने लगे हैं, मैं उनका बेटा होते हुए भी उनसे ज्यादा उम्र का और वृद्ध दिखाई देता हूं, जबकि वे पूरी तरह से स्वस्थ एवं यौवनवान हैं। यह सब डॉ. श्रीमाली के रसायन और आयुर्वेद ज्ञान का परिणाम है।

वास्तव में ही वे आयुर्वेद के क्षेत्र में अद्वितीय है।

उपरोक्त विचार जीवन की धारा में जीने वाले सामान्य गृहस्थ लोगों के है, पूज्य गुरुदेव ने हजारों -लाखों लोगों का कल्याण किया है और उन घरों में पूज्य गुरुदेव की नित्य पूजा अर्चना संपन्न की जाती है।

आज पूज्य गुरूदेव ने जो ज्ञान इस विश्व को दिया है वह सबसे बड़ी धरोहर है, यह ज्ञान यह अमृत वाणी लाखों लाखों लोगों के लिये जगमगाते सूर्य के समान है, जीवन का आधार है।

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाई कोर्ट कालोनी
जोधपुर-342001
(राजस्थान)

उपलब्धियां:-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका पिछले 12 वर्षों से प्रतिमाह बराबर प्रकाशित हो रही है ज्ञान विज्ञान साहित्य और साधना से संबंधित तथा विश्व में आध्यात्मिक दृष्टि से होने वाली उपलब्धियों को इस पत्रिका में बराबर प्रकाशित किया जाता है, यह एक मात्र ऐसी पत्रिका है जिसमें आध्यात्मिक जीवन तथा महत्वपूर्ण एवं लुप्त तंत्र मंत्रों के बारे में पूरी-पूरी जानकारी रहती है। इस पत्रिका के अध्ययन से लाखों व्यक्तियों ने अपने जीवन को सजाया है, संवारा है। वास्तव में ही यह पत्रिका आपके लिये वरदान स्वरूप है, और आने वाली पीढ़ियों के लिये यह एक संग्रहणीय थाती है।

इस पत्रिका में कुछ योजनाएं पाठकों एवं साधकों के लिये बनाई है, जिसमें आप भाग लेकर एक तरफ जहां आध्यात्मिक एवं पत्रिका को उन्नत करने में सहयोग देंगें वहीं दूसरी ओर आप जीवन भर के लिये इससे लाभ उठाते रहेंगे।

पंचवर्षीय सदस्यता:-

पांच वर्ष का पत्रिका सदस्यता शुल्क 750/- रुपये होता है, परन्तु आप केवल 700/- रुपये देकर अगले पांच वर्षों के लिये पत्रिका के सदस्य बन सकते है। आपको प्रतिमाह नियमित रूप से पत्रिका आपके घर तक पहुंचती रहेगी, इससे प्रतिवर्ष आपको पत्रिका शुल्क भेजने का झंझट नहीं रहेगा।

इसके साथ ही साथ आपको अद्‌भुत चमत्कारिक मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पारद शिवलिंग सर्वथा मुफ्त में भेंट स्वरूप प्राप्त होगा जो कि आपके लिये अनुकूल अवं आर्थिक, भौतिक दृष्टि से उन्नतिप्रद होगा। वास्तव में ही पारे से निर्मित यह शिवलिंग आपके पूरे जीवन को सुखी, सफल, समृद्ध एवं उन्नति की और अग्रसर करने में सहायक होगा।

आजीवन सदस्यता:-

यह पत्रिका का गौरवपूर्ण प्रयास है और इस योजना के अन्तर्गत आप जीवन भर बिना धनराशि व्यय किये पत्रिका प्राप्त करते रहेंगे।